सान्ध्य हिन्दी दैनिक

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

वर्ष - 02 | अंक - 309 | जौनपुर, सोमवार, 05 अगस्त 2024 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज - 4 | मूल्य - 2 रूपये

नौ से 15 अगस्त तक हर घर फहराया जाएगा तिरंगा – सीएम

लखनऊ, संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने सरकारी आवास पर उच्च स्तरीय बैठक में काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी महोत्सव एवं हर घर तिरंगा कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा की। इस दौरान अधिकारियों को आवश्यक दिशा–निर्देश भी दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं में काकोरी ट्रेन एक्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रदेश सरकार काकोरी ट्रेन एक्शन के शताब्दी महोत्सव को पूरे राज्य में विभिन्न गतिविधियों के साथ वर्षपर्यंत धूमधाम से मनाएगी। इस वर्ष 9 से 15 अगस्त के मध्य प्रदेशव्यापी हर घर तिरंगा अभियान आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम की रूपरेखा पर चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि काकोरी ट्रेन एक्शन के शताब्दी महोत्सव की शुरुआत आगामी 9 अगस्त से होगी। इस अवसर पर प्रदेश के शहीद स्मारकों, स्मृति स्थलों, अमृत सरोवरों के तट पर वृहद रूप से कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। समारोह में शहीदों के परिजनों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिजनों, भूतपूर्व सैनिकों को सम्मानित किया जाए। इन कार्यक्रमों में स्कूली बच्चों, किशोरों, युवाओं का सहयोग व सहभागिता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि काकोरी ट्रेन एक्शन, 1857 से 1947 तक के स्वतंत्रता संग्राम की घटनाओं, स्थलों व आजादी के ज्ञात–अज्ञात नायकों के संबंध में बुकलेट तैयार कराई जाए तथा प्रभातफेरी, सामान्य ज्ञान, चित्रकला, सुलेख–निबंध, वाद–विवाद, भाषण आदि प्रतियोगिताएं कराई जाएं। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को जनपद व राज्य स्तर पर पुरस्कृत किया जाए। विजेता बच्चों को काकोरी स्मारक स्थल का भ्रमण भी कराया जाए। मुख्यमंत्री जी ने निर्देश दिया कि इन कार्यक्रमों से केंद्र व प्रदेश सरकार के मंत्रीगण, जनप्रतिनिधियों को भी जोड़ें। पर्यटन व संस्कृति विभाग इस आयोजन का नोडल विभाग है। विभाग अन्य विभागों के साथ समन्वय स्थापित कर आयोजनों की तैयारी सुनिश्चित करे। मुख्यमंत्री ने कहा कि मुख्य सचिव व पुलिस महानिदेशक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जनपदों को काकोरी ट्रेन एक्शन व हर घर तिरंगा से जुड़े कार्यक्रमों को लेकर निर्देशित करें। साथ ही संबंधित विभागों के अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव विभागाध्यक्ष भी अपने स्तर से विभागीय अधिकारियों को इन कार्यक्रमों के बारे में दिशा–निर्देश दें। मुख्यमंत्री ने कहा कि पुलिस, पीएसी, होमगार्ड, पैरामिलिट्री, मिलिट्री, एनसीसी व स्कूलों के बैंड का प्रशिक्षण कराते हुए 9 से 15 अगस्त प्रदेश के शहीद स्थलों, स्मारकों इत्यादि पर राष्ट्रधुन व राष्ट्रभक्ति के गीत बजाए जाएं।

स्वयंसेवकों को भी काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी महोत्सव व हर घर तिरंगा कार्यक्रमों से जोड़ा जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि विभिन्न नागरिक संगठनों, युवक व महिला मंगल दल, स्काउट गाइड, एनसीसी, एनएसएस के सामाजिक संगठनों, व्यापारिक संगठनों, स्वयंसेवी संस्थाओं व जनसहभागिता के माध्यम से रक्तदान शिविर आदि का भी आयोजन किया जाए तथा जनसहयोग से अस्पतालों में फल वितरण भी किया जाए। काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी महोत्सव का एक श्लोगोश बनाएं। इसका वर्ष भर आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में प्रयोग किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि नगर विकास व पंचायतीराज विभाग द्वारा स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े समस्त स्थलों की साफ–सफाई की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। मंडियों में भी साफ–सफाई की बेहतर व्यवस्था हो और राष्ट्रभक्ति से जुड़े गीतध्धुन बजाई जाए। लखनऊ व शाहजहांपुर में शहीद मेले का आयोजन किया जाए।

घर–घर फहरेगा तिरंगा

मुख्यमंत्री ने कहा विगत वर्षों में हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत उत्तर प्रदेश ने सर्वाधिक झंडे फहराने का रिकॉर्ड बनाया। उसी प्रकार इस वर्ष भी 9 से 15 अगस्त के मध्य पूरे प्रदेश में हर घर तिरंगा अभियान आयोजित किया जाए। हर घर तिरंगा अभियान के दृष्टिगत संबंधित विभागों द्वारा झंडों की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि लोगों को झंडे खरीदने के लिए बेहतर व्यवस्था की जाए तथा विभिन्न माध्यमों का उपयोग करते हुए झंडे को फहराने की सही जानकारी उपलब्ध कराई जाए। प्लास्टिक के झंडों का उपयोग कतई न किया जाए। हर घर तिरंगा अभियान से जुड़े कार्यक्रमों की फोटो, वीडियो, सेल्फी पोर्टल पर अपलोड भी किया जाए।

सुप्रीम कोर्ट का फैसला आरक्षण को खत्म करने जैसा – मायावती

लखनऊ, संवाददाता। बसपा सुप्रीमों मायावती ने लखनऊ में प्रेस वार्ता की। इस प्रेस वार्ता में उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के द्वारा अनुसूचित जातियों को उपजातियों में विभाजित करने के फैसले पर सवाल उठाया। मायावती ने कहा कि उनकी पार्टी सुप्रीम कोर्ट द्वारा किए गए एससी जाति में उपजाति विभाजन करने के फैसले से सहमत नहीं है। मायावती ने कहा कि आरक्षण पर नई सूची बनाने से कई तरह की परेशानियां सामने आएंगी। उन्होंने कहा कि पंजाब राज्य के मामले में 20 साल पहले के फैसले पर सुनवाई सही नहीं। साथ ही साथ एससी एसटी के बीच उपजाति का विभाजन करना सही नहीं फैसला नहीं होगा। बसपा सुप्रीमों ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला कहीं न कहीं आरक्षण को खत्म करने के प्लान जैसा है। उन्होंने क्रीमीलेयर के मानक पर भी सवाल उठाए। मायावती ने दो टूक लहजे में कहा कि भविष्य में आरक्षण में किसी भी तरह के बदलाव की कोशिशें न हों। संविधान के नौवीं अनुसूची में इसे शामिल किया जाए। अनूसूचित जातियों को आगाह करते हुए मायावती ने कहा कि आपातकालीन की स्थिति को समझते हुए एससी–एसटी वर्ग को एकजुट होने की जरूरत है। यदि वह बंटे रहेंगे तो विरोधी उनका फायदा उठाएंगे।

2029 में भी मोदी जी आएंगें - शाह

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने चंडीगढ़ के मनीमाजरा में चौबीस घंटे जलापूर्ति सुनिश्चित करने वाली परियोजना का रविवार को उद्घाटन किया। इसके बाद उन्होंने विपक्ष पर भी जमकर निशाना साधा। अमित शाह ने चंडीगढ़ में कहा भाजपा ने 2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को तीन चुनाव में मिली सीट से अधिक सीट जीतीं। उन्होंने आगे कहा कि राजग सरकार न केवल अपना यह कार्यकाल पूरा करेगी, बल्कि अगला कार्यकाल भी इसी सरकार का होगा। शाह ने अपने संबोधन के दौरान कहा कि मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि विपक्ष को जो करना है करने दो, 2029 में एनडीए आएगा, मोदी जी आएंगे। वे (विपक्ष) नहीं जानते कि इस चुनाव में भाजपा ने कांग्रेस को तीन चुनावों में मिली सीटों से अधिक सीटें जीती हैं। उन्होंने विपक्ष पर हमला करते हुए कहा कि ये लोग जो अस्थिरता फैलाना चाहते हैं, बार–बार कहते हैं कि ये सरकार टिकने वाली नहीं है। मैं उन्हें आश्वस्त करने आया हूं कि न केवल सरकार अपना कार्यकाल पूरा करेगी बल्कि अगली सरकार एनडीए की होगी और वे विपक्ष में बैठने के लिए तैयार रहेंगे और विपक्ष में ठीक से काम करने का तरीका सीखेंगे। गृह मंत्री ने कहा कि आज जिस परियोजना का उद्घाटन किया गया है, उससे 24 घंटे आपको (लोगों को) पानी मिलेगा। आज से बहनों को अलार्म नहीं लगाना पड़ेगा, आप टेप ऑन कर लीजिए, पानी मिल जाएगा। कोई टैंकर नहीं होगा। इस पर 75 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। इससे 1 लाख से ज्यादा लोगों को फायदा होगा। कुल 75 करोड़ रुपये की लागत से स्थापित इस परियोजना से मनीमाजरा के एक लाख से अधिक निवासियों को लाभ मिलेगा, जिनमें मॉडर्न हाउसिंग कॉम्प्लेक्स, शिवालिक एन्क्लेव, इंदिरा कॉलोनी और शास्त्री नगर में रहने वाले लोग भी शामिल हैं।

बिहार के मुख्यमंत्री कार्यालय को बम से उड़ाने की धमकी मिली

बिहार, एजेंसी। बिहार पुलिस ने मुख्यमंत्री कार्यालय को बम से उड़ाने की धमकी देने वाले एक ई–मेल के सिलसिले में मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी।

सचिवालय थाने के निरीक्षक संजीव कुमार के बयान के आधार पर दर्ज की गई प्राथमिकी के अनुसार, 16 जुलाई को ई–मेल मुख्यमंत्री कार्यालय को भेजा गया था। उन्होंने बताया कि ई–मेल भेजने वाले ने दावा किया था कि वह अल–कायदा से जुड़ा है और उसने मुख्यमंत्री कार्यालय परिसर को बम से उड़ाने की धमकी दी थी।

पटना के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजीव मिश्रा ने 'पीटीआई –भाषा' को बताया, ''यह एक पुराना मामला है...हमने जांच के बाद दो अगस्त, 2024 को प्राथमिकी दर्ज की।

बिहार पुलिस के राज्य अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एससीआरबी) की वेबसाइट पर उपलब्ध प्राथमिकी के अनुसार, भारतीय न्याय संहिता और आईटी अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

संक्षिप्त खबरें

सरकारी कर्मचारियों की राजस्थान के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका – मुख्यमंत्री

जयपुर, एजेसी। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को कहा कि समाज के सभी वर्गों के उत्थान से ही विकसित राजस्थान का सपना साकार हो सकता है, इसलिए राज्य सरकार ने सरकारी कर्मचारियों एवं पेंशन भोगियों के हितों को ध्यान में रखते हुए परिवर्तित राज्य बजट 2024–25 में उनके सुझावों को शामिल करते हुए प्रावधान किए हैं। शर्मा ने मुख्यमंत्री निवास पर राज्य के सरकारी कर्मचारियों एवं पेंशन भोगियों के लिए बजट घोषणाओं पर धन्यवाद सभा को संबोधित करते हुए यह बात कही।

केरल की त्रासदी को राष्ट्रीय आपदा माना जाना चाहिए – राज्यपाल

मथुरा, संवाददाता। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान एक दिवसीय दौरे पर रविवार को मथुरा आए हुए हैं। यहां एक कार्यक्रम के दौरान उन्होंने कहा कि केरल में आई प्राकृतिक आपदा को राष्ट्रीय त्रासदी माना जाना चाहिए। राज्यपाल ने पत्रकारों के सवालों का जवाब देते कहा, वायनाड की घटना बहुत ही दुखद और हृदय विदारक है। जहां भूस्खलन हुआ है, वहां एक तरफ पुल गिरा, तो दूसरी तरफ नदी ने अपना रास्ता बदल लिया। नदी के रास्ता बदलने के कारण जो मौतें हुई हैं, अभी सिर्फ उनकी गिनती हुई है। वहां पर पहुंचा नहीं जा सका था।

लायंस क्लब क्षितिज का 6वां शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

प्रदीप सिंह बने अध्यक्ष व अजीत सोनकर सचिव

जौनपुर ब्यूरो चीफ

लायंस क्लब जौनपुर क्षितिज का 6वां शपथ ग्रहण समारोह नगर के प्रतिष्ठित होटल में शानदार ढंग से संपन्न हुआ। अध्यक्ष बलबीर सिंह बग्गा, उप मंडल अध्यक्ष एमजेएफ डॉक्टर अर्पण धर दुबे, एमजेएफ उदय चंदानी, मुख्य वक्ता पी.एम.जे.एफ. सौरभ कांत श्रीवास्तव, गैट एरिया लीडर पी.एम.जे.एफ. डॉक्टर क्षितिज शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति में दीप प्रज्वलन किया गया। वंशिका सिंह ने ध्वज वंदना पाठ किया। निवर्तमान अध्यक्ष लायन धर्मेंद्र सेठ ने आए हुए अतिथियों का स्वागत कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया, अनुष्का चौधरी ने गणेश वंदना की प्रस्तुति दी तथा सचिव प्रदीप श्रीवास्तव ने वर्ष पर्यंत किए गए कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। उद्घाटनकर्ता पी.एम.जे.एफ. डॉक्टर क्षितिज शर्मा ने लायनिज्म के बारे में बताया। उप मंडल अध्यक्ष एमजेएफ उदय चंदानी ने नए सदस्य श्रीकांत महेश्वरी, सरला महेश्वरी, डॉक्टर दिनेश कुमार, चंद्रशेखर गुप्ता, अंजनी प्रजापति व सौरभ चौधरी को लायंस क्लब क्षितिज में सम्मिलित होने की शपथ दिलाई तथा उप मंडल अध्यक्ष प्रथम एमजेएफ डॉक्टर अर्पण धर दुबे ने नई कार्यकारिणी के उपाध्यक्ष अतुल सिंह, कौशल त्रिपाठी, सचिव अजीत सोनकर, सहसचिव सुनील कनौजिया, कोषाध्यक्ष दीपक साहू, सह कोषाध्यक्ष संजय जयसवाल, पब्लिक रिलेशन ऑफिसर प्रदीप श्रीवास्तव, एडमिनिस्ट्रेटर विष्णु सहाय एलसीएफ कोऑर्डिनेटर संजय बैंकर, चेयरपर्सन हाफिज शाह, डॉक्टर प्रशांत द्विवेदी, वैभव श्रीवास्तव, विनय बारोतिया, विशाल बरनवाल, सर्वेश जयसवाल, अतुल चतुर्वेदी, जगन्नाथ मोदनवाल सुड्डू, संजय सिंह मौर्य, मनीष मौर्य, राम कृपाल जायसवाल, डॉ विकास रस्तोगी, डॉ सतीश चंद्र मौर्य, रत्नेश जी वैश्य, राजीव गुप्ता, अभिषेक गुप्ता शम्मी, नीरज सिंह, देवेंद्र श्रीवास्तव, देवेश जी वैश्य, दिलीप जायसवाल, आशीष चौरसिया, देवेंद्र सिंह पिंकू, हसन अब्बास, राम अचल मौर्य, डॉक्टर चंदन नाथ गुप्ता, नीरज श्रीवास्तव, सुनील जायसवाल तथा संजय गुप्ता को शपथ दिलाई। ढोल नगाड़ों के बीच संस्था के सभी सदस्यों ने अध्यक्ष लायन प्रदीप सिंह को ससम्मान मंच पर पहुंचाया, उन्होंने वर्ष 2024–25 के अध्यक्ष पद की शपथ ली। तत्पश्चात नगर के विभिन्न संस्थाओं से आए हुए गणमान्य व्यक्तियों ने अध्यक्ष प्रदीप सिंह को फूल मालाओं के साथ भव्य स्वागत किया। जेसीआई जौनपुर, तिलकधारी मेमोरियल कॉलेज, दुर्गा पूजा महासमिति, देव दीपावली समिति, रोटरी क्लब, संस्कार भारती, भारत विकास परिषद, मॉर्निंग वॉकर्स क्लब, जगन्नाथ यात्रा समिति, लायंस क्लब व अन्य कई संस्थाओं के पदाधिकारीयों ने अध्यक्ष प्रदीप सिंह व उनकी टीम का भव्य स्वागत किया। मुख्य वक्ता पी.एम. जे.एफ. सौरभ कांत ने कहा की शहर

की विभिन्न संस्थाओं ने जिस तरह आपके ऊपर भरोसा जताया है समाज सेवा के कार्यों के प्रति आपकी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है जिसका पूरी सूझबूझ के साथ आपको निर्वहन करना है। मंडल अध्यक्ष ने पूर्व अध्यक्ष लायन विष्णु सहाय को दानदाता के उपाधि एमजेएफ की पिन प्रदान की। कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती अर्चना सिंह व लायन अतुल सिंह ने किया। कार्यक्रम के संयोजक सचिव प्रदीप श्रीवास्तव व सुनील कनौजिया ने आए हुए सभी आगंतुकों को धन्यवाद प्रेषित किया। उक्त कार्यक्रम में संस्थापक अध्यक्ष शशांक सिंह रानू, पूर्व अध्यक्ष दिलीप सिंह, जय कृष्ण साहू, मनीष गुप्ता, मंडल सचिव सुधीर भल्ला, मंडल कोषाध्यक्ष ऋषि जायसवाल, मंडल पी.आर.ओ. अशोक वर्मा, रीजन चेयरपर्सन मनीष, जोन चेयरपर्सन धीरज गुप्ता, ब्रहमेश शुक्ल, रजनीकान्त द्विवेदी, राधे रमण जायसवाल, आशुतोष जायसवाल, डॉ वी यस उपाध्याय, सोमेश्वर केसरवानी, श्याम मोहन अग्रवाल, विवेक सिंह, आशीष गुप्ता आँशु, नीतू सिंह, यवनिका सिंह, सीमा सहाय, चेतना साहू, सरिता मिंगलानी, सुषमा सोनकर, चाँदनी साहू, ज्योति श्रीवास्तव, प्रिती गुप्ता, उर्वसी सिंह आदि उपस्थित रहे।

15 अगस्त से बिहार में यात्रा पर निकलेंगे तेजस्वी यादव

बिहार, एजेंसी। जदयू के वरिष्ठ नेता और राज्य मंत्री अशोक चौधरी ने शनिवार को विपक्ष के नेता (एलओपी) और राष्ट्रीय जनता दल

नेता तेजस्वी यादव पर निशाना साधा, जिन्होंने नीतीश कुमार के नेतृत्व वाले एनडीए सरकार की कथित विफलताओं को उजागर करने के लिए राज्यव्यापी दौरे पर जाने का फैसला किया है। यादव द्वारा 15 अगस्त से यात्रा शुरू करने की अपनी योजना की घोषणा की है। इस पर पलटवार करते हुए कहा कि अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में, यादव ने वंचित जातियों के लिए बढ़े हुए आरक्षण को बहाल करने की नीतीश कुमार सरकार की प्रतिबद्धता पर सवाल उठाया था और आरोप लगाया था कि केंद्र में सत्तारूढ़ गठबंधन का हिस्सा होने के बावजूद, हमारी पार्टी बिहार के लिए विशेष दर्जा हासिल करने में विफल रही। उन्होंने यह भी दावा किया था राज्य में अपराध का ग्राफ बढ़ रहा था। चौधरी, एक दलित, ने राजद नेता की 15 साल की अवधि के दौरान, जब उन्होंने बिहार पर शासन किया थाष्पंचायतों में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को आरक्षण देने में उनकी पार्टी की षविफलताष के लिए आलोचना की। चौधरी ने बताया कि 2005 में नीतीश कुमार के सत्ता में आने के बाद ही दलितों को उनका संवैधानिक अधिकार (पंचायतों में आरक्षण) मिला। चौधरी, जो पहले कांग्रेस में थे और उस पार्टी के कोटे से यादव की मां राबड़ी देवी के मंत्रिमंडल में काम कर चुके थे, ने कहा, राजद, स्पष्ट रूप से, कभी भी दलितों और आदिवासियों का शुभचिंतक नहीं रहा है। यह नीतीश कुमार ही थे जिन्होंने सेट किया था एससी और एसटी कल्याण के लिए एक विभाग बनाया गया है।

अरविंद केजरीवाल शेर हैं, वह ना टूटेंगे और ना मोदी के सामने झुकेंगे

हरियाणा में इस साल विधानसभा के चुनाव होने है। अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी राज्य में अपने दम पर चुनाव लड़ने का ऐलान कर चुकी है। पार्टी की ओर से इसको लेकर अभियान भी चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने सोहना में एक जनसभा को संबोधित किया। सुनिता केजरीवाल ने इस दौरान कहा कि क्या कोई और पार्टी है जिसने सरकारी स्कूलों, अस्पतालों की हालत सुधारी हो, मुहल्ला क्लिनिक बनाये हों, मुफ्त बिजली दी हो? उन्होंने जोर देते हुए कहा कि देश में ऐसे सभी विकास कार्य केवल अरविंद केजरीवाल ही कर सकते हैं। अरविंद केजरीवाल ने दावा किया कि पीएम मोदी ऐसे विकास कार्य नहीं कर पा रहे हैं। अरविंद केजरीवाल के ऐसे विकास कार्यों को रोकने के लिए पीएम मोदी ने उन्हें फर्जी केस में जेल में डाल दिया है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के बेटे अरविंद केजरीवाल पीएम

मोदी के सामने नहीं झुकेंगे. 2014 में जब नरेंद्र मोदी पीएम बने तो गुजरात की जनता ने उनके समर्थन में वोट किया। उन्होंने दावा किया कि अरविंद केजरीवाल ने पूरे देश में हरियाणा को गौरवान्वित किया है। आगामी हरियाणा विधानसभा चुनाव में भाजपा को एक भी वोट नहीं मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि केजरीवाल ने पंजाब और दिल्ली में भी गारंटी दी थी और वहां काम हो रहा है। अब केजरीवाल ने हरियाणा की जनता को भी पांच गारंटी दी हैं। प्रदेश के सभी घरों में 24 घंटे और मुफ्त बिजली दी जाएगी। सभी गांवों में मोहल्ला क्लिनिक बना कर लोगों का मुफ्त इलाज किया जाएगा। हरियाणा के सरकारी स्कूलों को शानदार बनाया जाएगा, जहां बेहतरीन शिक्षा मिलेगी। हरियाणा की माताओं–बहनों को मुफ्त बस सफर की सुविधा दी जाएगी। हर बेरोजगार युवा को रोजगार दिया जाएगा। उन्होंने लोगों से कहा कि आपके बेटे ने दिल्ली और पंजाब को बदल दिया है। मोदी से जनता का हित और उनका काम देखा नहीं गया और उन्होंने हरियाणा के लाल – अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार करा दिया। लेकिन हरियाणा वाले मोदी के इस अन्याय का बदला लेंगे और केजरीवाल के साथ हुए अन्याय का बदला लेंगे। उन्होंने कहा कि मोदी ने हरियाणा के लोगों को चुनौती दी है कि मैंने आपके बेटे को जेल में डाल दिया है, अब जो करना है कर लो। क्या आप लोग यह अन्याय सहेंगे? मैं नरेंद्र मोदी को बता दूं कि अरविंद केजरीवाल शेर हैं और वह आपके सामने ना टूटेंगे और ना ही झुकेंगे।

संपादकीय

वर्षा त्रासदी से सबक

क्या होता है जब पाठकों और विद्वानों के लिए ये सुरक्षित ठिकाने मौत के जाल में बदल जाते हैं? 27 जुलाई को श्रेया यादव, निविन दलविन और तान्या सोनी, जो सभी बीस साल की उम्र के थे, दिल्ली के ओल्ड राजिंदर नगर में बाढ़ से भरे बेसमेंट लाइब्रेरी में डूब गए। तीनों यूपीएससी (संघ लोक सेवा आयोग) के उम्मीदवार राऊ के आईएएस स्टडी सर्किल के छात्र थे, जो एक सिविल सेवा परीक्षा कोचिंग सेंटर है। संस्थान की लाइब्रेरी बिना किसी आधिकारिक मंजूरी के बेसमेंट में थी। दिल्ली के मास्टर प्लान 2021 में निर्धारित मानदंडों के अनुसार, संस्थान को अपने बेसमेंट का उपयोग केवल भंडारण, पार्किंग और उपयोगिता क्षेत्र के लिए करने की अनुमति थी उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन, पड़ोस में भारी बारिश हुई जबकि शहर के कई अन्य हिस्से सूखे रहे। यह पहली बार नहीं था जब बारिश का पानी बेसमेंट लाइब्रेरी में भर गया था, लेकिन मूसलाधार बारिश के साथ–साथ कई स्तरों पर कुप्रबंधन और अवैधताओं ने इसे और भी भयंकर बना दिया। बाहर की सड़कें जलमग्न हो गईं। अतिक्रमण के कारण इलाके में बारिश के पानी की निकासी बाधित हो गई। रैंप की वजह से बारिश का पानी नालियों में नहीं जा पा रहा था। दिल्ली नगर निगम के इंजीनियरों की रिपोर्ट में आरोप लगाया गया है कि जलभराव वाले इलाके से गुजर रहे एक वाहन की वजह से इतनी लहरें उठीं कि संस्थान का एक गेट टूट गया, जिससे बारिश का पानी बेसमेंट लाइब्रेरी में भर गया। लाइब्रेरी में मौजूद करीब तीस छात्र बड़ी मुश्किल से बाहर निकलने में कामयाब रहे, लेकिन श्रेया, तान्या और निविन फंस गए। तीनों की मौत बारिश के पानी में डूबकर हो गई। जांच जारी है। भारत की राजधानी में बाढ़ से भरे बेसमेंट लाइब्रेरी और डूबकर हुई मौत को हम कैसे देखते हैं? मुझे बारिश से कभी डर नहीं लगा। यह रोमांस, कविता और संगीत का माहौल था। अब, जब भारी बारिश शुरू होती है, तो मुझे एक अजीब सा डर सताता है। भले ही मैं सीधे तौर पर प्रभावित न होऊं, लेकिन मैं यह सोचना बंद नहीं कर सकता कि कोई, कहीं न कहीं बाढ़ से भरे बेसमेंट में फंसा हुआ है और अपनी आखिरी सांसें ले रहा है। बचे हुए लोगों के अनुभव बताते हैं कि बंद जगह में पानी के भंवर में फंसे लोग किस तरह के डर और असहाय महसूस कर रहे हैं। अगर भारत की राजधानी में ऐसा हो सकता है, तो जरा छोटे शहरों की स्थिति की कल्पना करें? अपने जीवन के सबसे अच्छे दौर में तीन युवा भारतीयों की दुखद और पूरी तरह से रोकी जा सकने वाली मौतों ने कई चर्चाओं को जन्म दिया है। इनमें से एक मुख्य चर्चा शासन से संबंधित है। आश्चर्य की बात नहीं है कि अति–ध्रुवीकृत भारत में, यहां तक घ्कि एक त्रासदी या आपदा भी एक भयंकर दोषारोपण के खेल को बढ़ावा देती है। आम आदमी पार्टी, जो वर्तमान में दिल्ली सरकार के साथ–साथ नागरिक निकाय (दिल्ली नगर निगम, एमसीडी) को नियंत्रित करती है और भारतीय जनता पार्टी, जो केंद्र में फैसले लेती है, दिल्ली पुलिस (केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत) को नियंत्रित करती है और जो अपने प्रतिद्वंद्वी और विपक्षी दल से सत्ता वापस छीनना चाहती है, के बीच एक मौखिक लड़ाई शुरू हो गई है। इससे कोई भी खुश नहीं होता। और नागरिकों के रूप में, हमें दोषारोपण के खेल को मूल मुद्दे से विचलित नहीं होने देना चाहिए – अवैधताओं की व्यापक स्वीकृति और सुरक्षा मानदंडों का उल्लंघन। राउ का आईएएस स्टडी सर्किल किसी भी तरह से अलग नहीं था। मीडिया द्वारा की गई ग्राउंड रिपोर्ट एक भयावह तस्वीर पेश करती है। यह एक या दो या तीन नहीं है। दिल्ली भर में दर्जनों कोचिंग सेंटर बिल्डिंग कानूनों और सुरक्षा मानदंडों के घोर उल्लंघन के दोषी हैं। बेसमेंट में कई क्लासरूम और लाइब्रेरी में आग या आपातकालीन निकास, बिजली मीटर नहीं थेय तार टूटे हुए थे और सीढ़ियाँ संकरी थीं। एक राष्ट्रीय समाचार पत्र में हाल ही में छपी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि एक इलाके में नई इमारतों में भी छात्रों के लिए सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए कदम उठाने के बजाय अवैध रूप से बेसमेंट में लाइब्रेरी और क्लासरूम बनाए जा रहे हैं। यह सब विभिन्न सरकारी एजेंसियों की घोर लापरवाही या मिलीभगत की ओर इशारा करता है। एक छात्र ने पहले केंद्र, दिल्ली सरकार और एमसीडी को राउ के आईएएस स्टडी सर्किल द्वारा बेसमेंट के अवैध उपयोग और सुरक्षा मानदंडों की कमी के बारे में सचेत किया था। कुछ खास नहीं हुआ। यह भी आश्चर्य की बात है कि स्थानीय पुलिस सुरक्षा मानदंडों के घोर उल्लंघन से कैसे अनजान थी, जबकि कई संस्थान पुलिस स्टेशनों से पत्थर फेंकने की दूरी पर थे। लाइब्रेरी के अंदर डूबने से मौत पहली बार हुई है, लेकिन इनमें से कई जगह आग लगने का खतरा भी था। पिछले साल, उत्तरी दिल्ली के मुखर्जी नगर में एक यूपीएससी कोचिंग सेंटर में आग लग गई थी। 61 छात्रों के साथ–साथ कुछ अन्य लोगों को हाथ, गर्दन और पैर जलने के कारण अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। हर जगह मौत के जाल हैं। और यह सिर्फ बाढ़ वाले बेसमेंट तक सीमित नहीं है। पुल ढह रहे हैंय फ्लाईओवर ढह रहे हैं और हवाईअड्डों पर छतरियां ढह रही हैं। इन सभी में एक बात समान है कि अवैधताएं, सुरक्षा मानदंडों का उल्लंघन और आम भारतीयों के जीवन और कल्याण के प्रति पूरी तरह से उपेक्षा। भारी बारिश को दोष देना आसान है। लेकिन जलवायु परिवर्तन के समय में जो अनियमित और चरम मौसम को बढ़ावा देता है, दिल्ली जैसे अर्ध–शुष्क शहर में भी भारी बारिश होना आम बात हो गई है।

डेमोक्रेट्स खुश, रिपब्लिकन असमंजस में

आदित्य

27 जून को जो बिडेन– डोनाल्ड ट्रम्प के बीच राष्ट्रपति पद की बहस में कई घटनाक्रम हुए, जो अंततः 21 जुलाई को राष्ट्रपति जो बिडेन के दौड़ से हटने के साथ समाप्त हुए। इस बीच पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प पर हत्या का प्रयास हुआ।राष्ट्रपति बिडेन ने एक और कार्यकाल के लिए अपनी शारीरिक और मानसिक फिटनेस के बारे में चिंताओं को दूर करने के लिए मीडिया को संबोधित किया, लेकिन प्रत्येक उपस्थिति के साथ मामला बिगड़ता गया। बड़े दानदाताओं और यहां तक घ्कि पूर्व हाउस स्पीकर नैन्सी पेलोसी और हॉलीवुड आइकन जॉर्ज क्लूनी ने भी उनके बाहर निकलने की मांग में शामिल होने के कारण दबाव बढ़ा। ट्रम्प की हत्या के असफल प्रयास ने मामले को और बिगाड़ दिया क्योंकि श्री ट्रम्प ने जनता की सहानुभूति प्राप्त की और अपने वफादारों को उत्साहित किया।यह अचानक हुआ क्योंकि श्री बिडेन, कोविड–19 के लिए सकारात्मक परीक्षण के कारण समुद्र तट पर अपने रिट्रीट तक सीमित थे, उन्होंने 21 जुलाई को चुपचाप एक पत्र जारी किया जिसमें उन्होंने अपने बाहर निकलने की घोषणा की। इसके तुरंत बाद, उन्होंने अपने पसंदीदा प्रतिस्थापन के रूप में अपनी उपराष्ट्रपति कमला देवी हैरिस का समर्थन किया। बदले में उन्होंने संभावित प्रतिद्वंद्वियों को बेअसर करने और 19–22 अगस्त को शिकागो में डेमोक्रेटिक नेशनल कन्वेंशन में 3,636 प्रतिनिधियों में से अधिकांश का समर्थन हासिल करने के लिए बहुत तेजी से काम किया। सुश्री हैरिस की ताकत और कमजोरियाँ दोनों हैं। सबसे पहले, आश्चर्य का तत्व राष्ट्रपति बिडेन को संभालने के लिए तैयार ट्रम्प अभियान को पकड़ लेता है। अब उन्हें जल्दी से फिर से संगठित होना चाहिए और हमले की एक नई लाइन तैयार करनी चाहिए। दूसरा, क्योंकि वह एक अति–सक्रिय उपराष्ट्रपति नहीं थीं, इसलिए वह बिडेन प्रेसीडेंसी के अलोकप्रिय नीतिगत निर्णयों से अलग हो सकती हैं। तीसरा, श्री ट्रम्प से दो दशक छोटी होने के कारण, उम्र का तर्क, जो श्री बिडेन के लिए बोझ था, अब श्री ट्रम्प के गले में लटक रहा है. नकारात्मक पक्ष यह है कि वह कैलिफोर्निया से आती हैं, और इस प्रकार उन्हें आसानी से उदारवादी करार दिया जा सकता है। यह भी कहा जा रहा है कि उन्हें एक बड़े और शक्तिशाली राजनेता विली ब्राउन के साथ डेटिंग करके राजनीतिक संरक्षण मिला, हालाँकि वह अपनी पत्नी से अलग हो चुके थे। इसके अलावा, उन्हें उसी लैंगिक पूर्वाग्रह का सामना करना पड़ रहा है जिसका सामना हिलेरी क्लिंटन ने 2016 में किया था। 2020 के राष्ट्रपति पद के प्राइमरी के दौरान उन्हें सैन फ्रांसिस्को (2004–11) के जिला अटॉर्नी और कैलिफोर्निया (2011–17) के अटॉर्नी–जनरल के रूप में अफ्रीकी–अमेरिकी अपराधियों पर कानून के अत्यधिक सख्त प्रवर्तक के रूप में भी लेबल किया गया था। नीतिगत मुद्दों पर, महिलाओं के प्रजनन अधिकारों के उनके मजबूत बचाव से उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं का समर्थन हासिल करने में मदद मिलेगी। यह श्री ट्रम्प के साथी जे.डी. वेंस के रुख के विपरीत है। सुश्री हैरिस भी गाजा युद्ध पर इजरायल को बिडेन प्रशासन के लगभग बिना शर्त समर्थन से खुद को जल्दी से दूर करने में सक्षम रही हैं। जैसे–जैसे नागरिक हताहत होते गए, अमेरिका में, विशेष रूप से प्रमुख विश्वविद्यालय परिसरों में जनता की राय टूटती गई। उन्होंने अमेरिकी कांग्रेस को इजरायल के प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के संबोधन को छोड़कर असहजता का संकेत दिया। वह उनसे अलग से मिलीं और जाहिर तौर पर इजरायली अभियानों पर अपनी नाखुशी व्यक्त की। रिपब्लिकन और विशेष रूप से डोनाल्ड ट्रम्प के लिए रोटी और मक्खन का मुद्दा आव्रजन है। वे उन्हें अप्रवास का ष्जारष कहते हैं, जबकि उनकी भूमिका समस्या के

मूल कारणों की खोज तक सीमित थी। वे 2021 में उपराष्ट्रपति के रूप में अपनी पहली विदेश यात्रा पर ग्वाटेमाला गईं, ताकि यह अध्ययन किया जा सके कि किस तरह से प्रवास को स्रोत पर ही रोका जा सकता है। डेमोक्रेटिक जवाब यह है कि यह डोनाल्ड ट्रम्प ही थे जिन्होंने कांग्रेस में इस विषय पर द्विदलीय समझौते को रोका था। बिडेन प्रशासन ने सीमा की दीवार के निर्माण को धीमा कर दिया और बच्चों को माता–पिता से अलग करने की भयानक प्रथा को रोक दिया। लेकिन दीवारें लोगों की आवाजाही को नहीं रोकती हैं। इसका समाधान मध्य और दक्षिण अमेरिका के देशों के कानून प्रवर्तन और आर्थिक विकास के मिश्रण में निहित है। सुश्री हैरिस के संभावित नामांकन ने भारत में उत्साह पैदा किया। मजाक में, यह देखते हुए कि श्री वेंस की पत्नी तेलुगु हैं, कुछ लोगों ने इसे आंध्र प्रदेश बनाम तमिलनाडु की प्रतियोगिता कहा। हल्केपन को छोड़ दें, तो भारतीय मूल का कोई भी व्यक्ति, और उससे भी कम मिश्रित नस्ल का, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में पैदा हुआ और पला–बढ़ा है, सबसे पहले अमेरिकी हितों के बारे में सोचेगा। संयुक्त राष्ट्र में हमारे स्थायी प्रतिनिधियों को, जब निक्की हेली अमेरिकी राजदूत थीं, आधिकारिक तौर पर उनसे कोई विशेष व्यवहार नहीं मिला। हालांकि, सामाजिक स्तर पर, उनसे जुड़ना आसान था। हालांकि, सुश्री हैरिस अतीत में स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के लिए खड़ी रही हैं। जब वह सीनेटर थीं, तब उन्होंने एक भारतीय मूल के सहकर्मी का समर्थन किया था, जिसे विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने एक बार बैठक रद्द करके फटकार लगाई थी। राष्ट्रपति के रूप में, वह भारत–अमेरिका संबंधों को मजबूत करने के व्यापक संदर्भ में मानवाधिकारों और लोकतांत्रिक संस्थानों से समझौता करने के लिए भारतीय सरकार की सामयिक कार्रवाइयों को देखती थीं। लेकिन भारतीय नेतृत्व से निपटने में व्यक्तिगत सहजता एक अलग मामला है। इस प्रकार, द्विपक्षीय संबंधों पर स्पष्ट रूप से असर नहीं पड़ सकता है, लेकिन उनके मामले में, व्यक्तिगत गर्मजोशी अच्छी तरह से वाष्पित हो सकती है।

पिछली बार जब डोनाल्ड ट्रम्प पद पर थे, तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चापलूसी और सार्वजनिक नाटक के मिश्रण के माध्यम से चतुराई से उनका प्रबंधन किया था। लेकिन ट्रम्प के राष्ट्रपति पद के हमेशा अप्रत्याशित आयाम होंगे। बिजनेसवीक के साथ अपने नवीनतम साक्षात्कार में, वह अभी भी अपनी हार्ले डेविडसन कहानी और भारतीय मोटरसाइकिल पर ही केंद्रित हैं।

मंत्रालय के मुताबिक बेरोजगारी तेजी से घटी

पी. चिदंबरम

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 23 जुलाई व को साल 2024–25 का बजट पेश किया। उसके अगले दिन संसद के दोनों सदनों में इस पर चर्चा शुरू हुई, जबकि वित्त मंत्री ने लोकसभा में 30 जुलाई और राज्य सभा में 31 जुलाई को इसका जवाब दिया। वित्त मंत्री का जवाब तीन बड़े आधारों पर टिका था...

सरकार हर मद में अधिक पैसा खर्च कर रही है।

वित्त मंत्री के अनुसार, पैसे खर्च करना अच्छी शासन व्यवस्था का एक मापदंड है। इसके फलस्वरूप हर वर्ग के लोगों का विकास और कल्याण होता है। वित्त मंत्री ने अपनी बात को आंकड़ों के जरिये पुष्ट करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि यूपीए सरकार द्वारा अपने शासन के अंतिम साल 2013–14 में कितना खर्च किया गया था और एनडीए सरकार के पहले और आखिरी साल यानी 2019–20 में कितना खर्च किया गया और 2024–25 में कितना खर्च किया जाएगा। जाहिर तौर पर संख्या यह दर्शाती है कि साल दर साल बजट में इजाफा हुआ है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि 2013–14 में कृषि के लिए मात्र 30 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे, जबकि आज यह 1.52 लाख करोड़ रुपये है। यहां तक कि यह पिछले साल 2023–24 से भी आठ हजार करोड़ रुपये अधिक है। पिछले साल की तुलना में हमने इसमें वृद्धि की है, न कि कोई कमी। परेशानी मौजूदा कीमतों को लेकर थी, न कि स्थिर कीमतों को लेकर। बढ़ा हुआ व्यय उसी सूरत में प्रासंगिक होगा, जब इसे कुल व्यय या सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी के अनुपात में बताया जाएगा। इसके अलावा ऐसे अनेक मद हैं, जिनके लिए आवंटित राशि को 2023–24 में खर्च ही नहीं किया गया। इसके बारे में नहीं बताया गया, क्यों?

2. बेरोजगारी की समस्या है ही नहीं

वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार की नीति लोगों को सक्षम, स्वतंत्र और समर्थ बनाने की है। उन्होंने आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के आंकड़े बताते हुए कहा कि बेरोजगारी में 3.2 प्रतिशत की गिरावट आई है। एसबीआई की शोध रिपोर्ट में पाया गया कि 2014 से लेकर 2023 तक 125 मिलियन रोजगार पैदा किए गए। ये दोनों सरकारी रिपोर्ट हैं। सीएमआईई ने सरकार की इस रिपोर्ट का खंडन करते हुए कहा कि मौजूदा बेरोजगारी दर 9.2 प्रतिशत है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में जितनी बेरोजगारी है, उसमें 83 प्रतिशत युवा हैं। वित्त मंत्री ने इस सवाल का जवाब नहीं दिया कि सैकड़ों या हजारों नौकरियों के लिए लाखों उम्मीदवार क्यों हैं? उदाहरण के लिए यूपी पुलिस कांस्टेबल भर्ती परीक्षा 60,244 पदों के लिए 48 लाख से ज्यादा उम्मीदवारों ने परीक्षा दी, जिनमें 16 लाख महिलाएं थीं। अगर बेरोजगारी तेजी से घट रही है तो नौकरी में पदों और उम्मीदवारों का अनुपात इतना असमान क्यों है? ऊपर के दो उदाहरणों में पद और आवेदकों का अनुपात 1:80 और 1:329 था। इंजीनियर, मैनेजमेंट ग्रेजुएट, वकील और पीजी किए हुए छात्र एक कांस्टेबल या क्लर्क के पद के लिए क्यों आवेदन कर रहे हैं? बेरोजगारी की सच्चाई को जानने के लिए मैं प्रधानमंत्री और दूसरे मंत्रियों को यह सुझाव देना चाहता हूं कि उन्हें भारत के शहरों और कस्बों की गलियों में घूमना चाहिए। वित्त मंत्री तो अपने जन्म स्थान मदुरई से अपनी यात्रा शुरू कर विल्लुपुरम, जहां उन्होंने स्कूल की पढ़ाई की, जा सकती हैं और तिरुचिरापल्ली, जहां उन्होंने कॉलेज की पढ़ाई की है, में अपनी यात्रा समाप्त कर सकती हैं।

3. हमारी मुद्रास्फीति दर आपसे बेहतर है!

वित्त मंत्री ने कहा, ष्यूपीए सरकार हार्वर्ड और ऑक्सफोर्ड से पढ़े नेताओं द्वारा चलाई जा रही थी। उन्हें इस बात का पता नहीं था कि प्रोत्साहन को कब और कैसे हटाना है, जिसकी वजह से 2009 से 2013 के बीच मुद्रास्फीति दोहरे अंकों तक पहुंच गई। बड़ी ही चालाकी से उन्होंने किसी का नाम न लेते हुए अपनी सरकार को फजीहत से बचा लिया। वित्त मंत्री तकनीकी रूप से सही थीं, पर मुझे लगता है कि उनका वक्तव्य प्रासंगिक नहीं है। लोग अब यूपीए युग में नहीं, बल्कि मोदी 2.1 के समय में रह रहे हैं।

रेटिंग एजेंसी क्रिसिल के अनुसार, वे ऐसे समय में रह रहे हैं, जहां टमाटर, प्याज और आलू के दाम साल दर साल 30, 46 और 59 प्रतिशत की दर से बढ़े हैं। वे ऐसे समय में रह रहे हैं, जब थोक मूल्य सूचकांक मुद्रास्फीति 3.4 प्रतिशत हैय सीपीआई मुद्रास्फीति 5.1 प्रतिशत है और खाद्य मुद्रास्फीति 9.4 प्रतिशत है। वे एक ऐसे समय में जी रहे हैं, जब सभी श्रेणियों की मजदूरी पिछले छह सालों में स्थिर हो गई है। जब लोगों ने अप्रैल–मई 2024 में वोट दिया था तो उन्होंने यूपीए सरकार के समय में रही मुद्रास्फीति के खिलाफ नहीं, बल्कि मोदी सरकार के काल की मुद्रास्फीति के खिलाफ वोट दिया था।

वित्त मंत्री ने ऐसा कोई विचार नहीं सुझाया, जिससे मुद्रास्फीति को कम किया जा सके। उन्होंने न तो कीमतों में कोई कमी की, न ही करों या उपकरों में, न न्यूनतम मजदूरी बढ़ाई और न ही आपूर्ति बढ़ाने के लिए कोई प्रोत्साहन दिए। उन्होंने मुद्रास्फीति पर मुख्य आर्थिक सलाहकार के 15 शब्दों का उदाहरण दिया, ष्भारत की मुद्रास्फीति लगातार कम, स्थिर और चार प्रतिशत के लक्ष्य की ओर बढ़ रही है, इतना कहकर विषय को खारिज कर दिया। वित्त मंत्री ने इस सवाल का जवाब नहीं दिया कि अगर मुद्रास्फीति प्रबंधन इतना प्रशंसनीय था तो रिजर्व बैंक ने पिछले 13 महीनों से बैंक दर को 6.5 प्रतिशत क्यों कर रखा है? और इस साल इसमें कोई कमी भी नहीं होने वाली है। बजट पर आम लोगों की प्रतिक्रिया भी उतनी अच्छी नहीं रही। यहां तक कि सरकार की बड़ाई करने वाले भी डरे और सशंकित थे। अंत में वित्त मंत्री के जवाब से अन्य लोगों की तरह मैं भी उसी तरह की स्थिति में था, जैसा कि हम उनके बजट पेश करने के समय थे।

शिक्षा के केंद्रीकरण के नुकसान

विनय

आपातकाल के एक फैसले का जश्न मनाया जाना चाहिए। भले ही नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार यह दोहराना न भूले कि इस काले दौर के लिए कांग्रेस जिम्मेदार है और उसने 25 जून को संविधान हत्या दिवस भी घोषित किया है, लेकिन केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने शिक्षा को राज्य सूची से हटाकर समवर्ती सूची में डालने के 1976 के फैसले का समर्थन किया। आजादी के बाद से चली आ रही व्यवस्था ने संघवाद को कायम रखा। व्यावहारिक स्तर पर इसने राज्यों को क्षेत्रीय, जातीय और भाषाई रूप से विविधतापूर्ण देश में युवाओं को उनकी जरूरतों के हिसाब से शिक्षित करने के लिए अपना रास्ता बनाने की अनुमति दी। शिक्षा को समवर्ती सूची में डालने का मतलब था राज्यों और केंद्र के बीच सहयोग, जो एक अच्छी बात हो सकती है अगर केंद्रीय हस्तक्षेप राज्यों की समझ और व्यवहार के साथ संतुलित हो। लेकिन अगर केंद्र की सरकार एक ही व्यवस्था बनाने के नाम पर विचार, नीति और पद्धति की पूरी जगह हड़पने की कोशिश करती है, तो सहमति का बिंदु विफल हो जाएगा और राज्यों की स्वतंत्रता समाप्त हो जाएगी। इस असंतुलन का कुछ हिस्सा पहले से ही देखा जा सकता है। इसके नतीजे आशाजनक नहीं हैं। हाल ही में, अखिल भारतीय स्तर पर प्रवेश और योग्यता परीक्षा आयोजित करने के लिए श्री मोदी की सरकार के तहत गठित राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी, राष्ट्रीय प्रवेश–सह–पात्रता परीक्षा में लीक हुए पेपर और भ्रष्ट अंकन के आरोपों और राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा के आयोजन के एक दिन बाद ही इसे रद्द करने के साथ गंभीर रूप से कमजोर दिखी। जाहिर है, समस्याएँ पहले से ही थींय वे इस साल चरम पर पहुँच गईं। कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट ने अपनी शुरुआत से ही संस्थानों से उनकी जरूरतों और फोकस क्षेत्रों के अनुसार अपने स्वयं के प्रवेश परीक्षा आयोजित करने के अधिकार को छीनकर असंतोष पैदा किया। शिक्षा में एक ही आकार सभी के लिए उपयुक्त नहीं है। देश के लिए अनुकूलता का शिक्षा मंत्री का दावा तब बेमानी हो जाता है जब विभिन्न संस्थानों के अलग–अलग लक्ष्य होते हैं और वे अलग–अलग विषयों के संयोजन में अलग–अलग क्षमताओं और आकांक्षाओं वाले छात्रों को प्रशिक्षित करते हैं। इसके अलावा, यह विचार कि किसी विषय के बारे में छात्र की समझ और योग्यता को मापने के लिए केवल वस्तुनिष्ठ प्रश्न ही पर्याप्त हैं, मूर्खता की पराकाष्ठा है।

सरकारें टैक्स लगाए बिना चल नहीं सकती

अंशुमान

टैक्स से चिढ़ ऐतिहासिक है। यह जद्दोजहद तारीखी हो चुकी है। दिलजले कहते हैं कि जुर्माना तो कुछ गलत करने पर चुकाना पड़ता है, पर टैक्स तो हमारे सभ्य और ईमानदार होने का जुर्माना है, जो सरकारें गला पकड़ कर वसूलती हैं। जैसे ताजा बजट को लीजिए, सरकार ने आयकर में चने–चवेना लेने भर की जितनी रियायत दी, उससे ज्यादा निवेश पर टैक्स बढ़ाकर निचोड़ लिया। अमेरिकी हास्य अभिनेता टेरी प्रैचेट कहते थे कि मौत और टैक्स में मौत बेहतर है, क्योंकि वह एक बार ही आती है। दूसरी तरफ, सरकारों को लगता है कि लोग टैक्स ही नहीं चुकाते। भारतीय नेताओं की तो यह स्थायी शिकायत है कि यहां लोग टैक्स नहीं देते। यह बात दीगर है कि टैक्स और उसका संग्रह बढ़ता जाता है। यह बहस अनंत काल से चल रही है कि टैक्स मजबूरी है या जिम्मेदारी। सरकारें हमेशा से ऐसे जतन करती रही हैं कि अधिक से अधिक लोगों को टैक्स चुकाने पर राजी किया जाए। एक बार अमेरिका में तो राजस्व की कमी से परेशान सरकार ने एक कार्टून चरित्र को ही अपना टैक्स प्रचारक बना दिया। आइए, पकड़िए अपनी सीट टाइम मशीन में... हम उड़ चलते हैं अमेरिका की तरफ, जहां चुनाव की गहमागहमी बढ़ रही है। मगर हम कमला हैरिस या डोनाल्ड ट्रंप से मिलने नहीं जा रहे हैं। हम सीधे पहुंच रहे हैं 1930 के दशक में, जो अमेरिका का सबसे घटनाबहुल दशक था। इसी दौरान आई थी महामंदी, फिर दूसरा विश्वयुद्ध और पर्ल हार्बर पर जापान का हमला। हम मिलने वाले हैं हेनरी मोर्गनथाउ जूनियर से, जो अमेरिका के सबसे मशहूर यहूदी हैं। वाशिंगटन के गलियारे उनकी ताकत और सूझबूझ से लबरेज हैं। हेनरी मोर्गनथाउ के पिता हेनरी मोर्गनथाउ सीनियर भी खासे नामवर व्यक्ति थे। मगर बेटा बाप से बहुत आगे है। अब हमारे सामने जो घटने वाला है, वह हेनरी मोर्गनथाउ जूनियर को इतिहास में अनोखी जगह देगा। वाशिंगटन के कॉफी हाउस में आपने यह सुन ही लिया होगा कि मोर्गनथाउ खेती के विशेषज्ञ हैं। पहले विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिकी सरकार के खेती विभाग में काम कर चुके हैं। वह राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर का कार्यकाल था। पर वाशिंगटन में उनका रसूख बढ़ा फ्रैंकलिन रूजवेल्ट के साथ। रूजवेल्ट और मोर्गनथाउ के बीच गाढ़ी दोस्ती के किस्से खूब सुने जा रहे हैं। यह साल 1934 है। रूजवेल्ट राष्ट्रपति हैं और मोर्गनथाउ उनके वित्त मंत्री। मोर्गनथाउ रूजवेल्ट के मंदी निवारण अभियान के वित्तीय मैनेजर थे। अमेरिका को गहरी मंदी से उबारने के लिए संसाधनों का जुगाड़ मोर्गनथाउ ने ही किया है। आपको पता तो चल ही गया होगा कि दूसरे विश्वयुद्ध की तोपें गरजने लगी हैं। हिटलर के यहूदी संहार के खिलाफ अमेरिका की सबसे बड़ी आवाज बनकर गरज रहे हैं हेनरी मोर्गनथाउ। उनके कहने पर अमेरिकी सरकार ने बार रिफ्यूजी बोर्ड बनाया है, जिससे जनसंहार के शिकार यहूदियों को मदद दी जा रही है। इस बीच पर्ल हार्बर पर जापान ने हमला कर दिया है। दूसरे विश्वयुद्ध से अब तक दूर रहा अमेरिका अब इस लड़ाई में कूदने वाला है। मगर हम यहां से उड़ चलते हैं कैलिफोर्निया, क्योंकि टैक्स की जिस कहानी को तलाशते हुए हम करीब 80 साल पीछे आए हैं, उसके लिए मनोरंजन के नायक वाल्ट डिज्नी से मिलना होगा। हां, वही डोनाल्ड डक, मिकी माउस और इन जैसे असंख्य चरित्र देने वाले प्रसिद्ध कार्टून महानायक वाल्ट डिज्नी। अमेरिका विश्वयुद्ध में शामिल होने के लिए हथियार बांध रहा है। वित्त मंत्री मोर्गनथाउ को युद्ध के लिए संसाधन चाहिए। अमेरिका में वार बॉन्ड जारी कर दिए गए हैं। मोर्गनथाउ को लगता है कि अगर अमेरिकी लोगों को समय पर टैक्स चुकाने के लिए प्रेरित किया जाए, तो संसाधनों की किल्लत दूर हो जाएगी। यह दिसंबर, 1941 है। युद्ध की तैयारियों के बीच हम बरबैंक, कैलिफोर्निया आ गए हैं, जहां वाल्ट डिज्नी मोर्गनथाउ का संदेश पढ़ रहे हैं। बरबैंक से पहली उड़ान पकड़ डिज्नी वाशिंगटन डीसी पहुंच रहे हैं। डिज्नी को लगा था कि उन्हें युद्ध बॉन्ड के प्रचार में मदद करनी होगी, मगर मोर्गनथाउ का एजेंडा दूसरा था। मोर्गनथाउ ने डिज्नी स्टूडियो को ऐसी फिल्म बनाने के लिए कहा है, जो लोगों को वक्त पर टैक्स चुकाने के लिए प्रेरित करे। केवल छह सप्ताह का समय दिया गया है। यह फिल्म फरवरी, 1942 तक सिनेमाघरों में रिलीज की जाएगी। डिज्नी स्टूडियो में बनती सभी फिल्में रोक कर एक शॉर्ट फिल्म पर काम शुरू हो गया है। डोनाल्ड डक सबसे बड़ा कार्टून स्टार है, जो इस फिल्म का नायक होगा। जो ग्रांट और विल ह्यूमर ने फिल्म लिख डाली है। नाम है द न्यू स्पिरिट। स्टोरीबोर्ड लेकर वाल्ट डिज्नी फिर वाशिंगटन लौट आए हैं। बैठक लगी है। मगर यह क्या? मोर्गनथाउ डोनाल्ड डक के प्रशंसक नहीं हैं, उन्हें फिल्म का मजमून पसंद नहीं आया। कार्टूनों के निर्माता डिज्नी वित्त मंत्री मोर्गनथाउ से नाराज हैं। हों भी क्यों न? डोनाल्ड डक, डिज्नी स्टूडियो का मेगास्टार है। उसके नाम पर फिल्में दौड़ती हैं। यह फिल्म सिनेमावरों को मुफ्त दी जानी है, जिसके कारण डिज्नी स्टूडियो की अन्य फिल्मों की बुकिंग कैंसिल हो रही है। डिज्नी की कंपनी को 40,000 डॉलर का नुकसान होने जा रहा है। इधर 10 लाख डॉलर का कर्ज बैलेंस शीट में खड़ा है। डिज्नी स्टूडियो बहुत कुछ कुर्बान कर रहा है, मगर मोर्गनथाउ को फिल्म समझ में ही नहीं आ रही। पर वक्त डिज्नी के साथ है, मोर्गनथाउ के साथ नहीं। सरकार के पास वक्त कम है। अमेरिका में आयकर रिटर्न भरने की तारीख 15 मार्च तक है। इसलिए द न्यू स्पिरिट को मंजूरी मिल ही गई। अब हम न्यूयॉर्क के सिनेमाघर के सामने हैं। यहां पहली बार द न्यू स्पिरिट दिखाई जा रही है। फिल्म छा गई है। इस फिल्म में डोनाल्ड डक एक अभिनेता है। उसे टैक्स चुकाने का राष्ट्रीय कर्तव्य समझ में आता है, तो वह उत्साह में अपना रिटर्न लेकर सीधे वाशिंगटन पहुंच जाता है। इस फिल्म का डायलॉग मशहूर होने लगा है– टैक्सेस टू बीट द एक्सिस। अर्थात हिटलर– मुसोलिनी के गठजोड़ (एक्सिस) को हराने के लिए टैक्स चुकाना जरूरी है।

पूर्वांचल विश्वविद्यालय की हॉकी टीम के दो पूर्व खिलाड़ियों का ओलंपिक में शानदार प्रदर्शन

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। पेरिस ओलंपिक 2024 में प्रतिभाग कर रही भारतीय पुरुष हॉकी टीम में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय की हॉकी टीम के दो पूर्व खिलाड़ी भी शामिल है. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. वन्दना सिंह सोमवार को व्हाट्सएप कॉल पर ग्रेट ब्रिटेन के साथ हुए मैच में शानदार प्रदर्शन करने पर ललित कुमार उपाध्याय को बधाई दी. कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय के पूर्व खिलाड़ी आज देश के लिए खेल रहे है यह बहुत गौरव की बात है. उन्होंने आगे होने वाले मैच के लिए अपनी शुभकामनाएं दी है। गौरतलब हैकि पेरिस ओलंपिक 2024 में रविवार को भारत और ग्रेट ब्रिटेन के बीच रोमांचक मैचरहा. भारतीय हॉकी टीम ने क्वार्टर फाइनल मैच में ग्रेट ब्रिटेन को शूट आउट में हराते हुए सेमीफाइनल में जगह बना ली है. इस बार ओलंपिक में प्रतिभाग

करने गई भारतीय पुरुष हॉकी टीम में पूर्वांचल विश्वविद्यालय के दो पूर्व खिलाड़ी ललित कुमार उपाध्याय और राजकुमार पाल शामिल है. ललित कुमार उपाध्याय एवं राज कुमार पाल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय श्री मेघबरन सिंह पीजी कॉलेज, करनपुर गाजीपुर से स्नातक किया है. अध्ययन के दौरान वह विश्वविद्यालय पुरुष हॉकी टीम के सदस्य रहे और कई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओंमें पदक प्राप्त किया था. ललित कुमार उपाध्याय पिछले ओलंपिक में भी भारतीय टीम के सदस्य रहे थे टीम को कांस्य पदक मिला था.विश्वविद्यालय के खेल–कूद परिषद के सचिव प्रो.ओपी सिंह कहा कि यह दोनों खिलाडी अद्वितीय प्रतिभावान है और निश्चित तौर इस बार भारत की टीम गोल्ड लाएगी. इस अवसर पर संकायाध्यक्ष प्रो. मनोज मिश्र, डॉ. दिग्विजय सिंह राठौर, खेल सहायक रजनीश सिंह, डॉ राजेश सिंह और विश्वविद्यालय के खिलाडियों ने अपनी शुभकामनाएं दी है।

पास्को कोर्ट का फैसला – दुष्कर्म के आरोपी ताऊ को फांसी की सजा

हरदोई(अंबरीष कुमार सक्सेना) पाक्सो कोर्ट में सोमवार को एक आरोपी को फांसी की सजा सुनाई गई। तीन साल की भतीजी के साथ दुष्कर्म के आरोपी ताऊ को अपर जिला जज मोहम्मद नसीम (कोर्ट संख्या 14, बिशेष न्यायाधीश पॉक्सो एक्ट) ने फांसी की सजा सुनाई है। सांडी थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी तीन साल की बच्ची के साथ ताऊ ने 28 जुलाई 2020 की शाम सात बजे गांव में ही दुष्कर्म किया था। 4 साल तक मामले की सुनवाई चलने के बाद अपर जिला जज ने पीड़िता के सगे ताऊ को दोषी करार दिया। सोमवार को दिए फैसले में उन्होंने अभियुक्त को फांसी की सजा सुनाई है। लोग दुराचारी ताऊ ईश्वर पाल उर्फ ईशू को जी भरकर कोस रहे हैं। जिले के लोग इस दुष्कर्म की सजा पर प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं।

अब मध्यान्ह भोजन योजना के तहत गुरुवार को भी छात्रों को उपलब्ध कराया जाएगा अतिरिक्तखाद्य सामग्री

(डॉ अजय तिवारी
जिला संवाददाता)

अयोध्या। छात्रों के शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास के लिए अब उन्हें मध्यान्ह भोजन योजनान्तर्गत अतिरिक्त खाद्य सामग्री प्रदान किया जाएगा।इस योजना के तहत अब सप्ताह के प्रत्येक गुरुवार को छात्रों को मूंगफली की चिक्कीध्गुड़,तिल व मूंगफली से निर्मित गजकध् रामदाना से निर्मित लड्डूध्बाजरे से निर्मित लड्डू आदि 20–20 ग्राम की मात्रा में अथवा प्रत्येक छात्रों को 50–50 ग्राम भुना हुआ चना मे से किसी एक खाद्य पदार्थ का वितरण किया जाएगा।मध्यान्ह भोजन प्राधिकरण उत्तर प्रदेश की निदेशक कंचन वर्मा द्वारा प्रदेश के सभी जिलाधिकारियों को जारी पत्र के मुताबिक यह योजना नवम्बर 2024 से मार्च 2025 तक के बीच संचालित रहेगी।जिसमें प्रत्येक छात्रों पर 5–5 रुपए खर्च आयेगा।जो सप्ताह के हर गुरुवार को शिक्षण कार्य प्रारंभ होने से पहले छात्रों को वितरित किया जाएगा।

अगर किसी कारण वश गुरुवार को स्कूल में अवकाश रहता है तो उसके दूसरे दिन छात्रों मे यह खाद्य सामग्री वितरित की जायेगी। इस सामग्री को भी उसी तरह से क्रय की जायेगी जिस तरह से पूर्व में इस योजना के तहत निर्धारित अन्य सामाग्रियों की खरीदारी स्थानीय स्तर पर होती रही है। अगर खरीददारी के समय कोई सामग्री उपलब्ध नहीं रहेगी तो जिलाधिकारी द्वारा किसी अन्य सामग्री की क्रय/वितरण पर विचार किया जाएगा। बताते चलें कि अभी तक अतिरिक्त सामग्री के तहत सोमवार को पौष्टिक फल, बुधवार को दूध का वितरण छात्रों को किया जाता था।

मां का दूध शिशु के लिए सर्वोत्तम आहार – सीएमओ

(डॉ अजय तिवारी
जिला संवाददाता)

अयोध्या। विश्व स्तनपान दिवस कार्यशाला को मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ संजय जैन की अध्यक्षता में विश्व स्तनपान दिवस कार्यशाला मुख्य चिकित्सा अधिकारी सभागार दर्शन नगर में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में बताया गया कि मां के दूध शिशु के लिए सर्वोत्तम आहार है।मां का पहला गाढ़ा पीला दूध (कोलोस्ट्राम) शिशु का पहला प्राकृतिक टीका है। उन्होंने बताया कि शिशु के जन्म के एक घंटे के अंदर शीघ्र स्तनपान कराने से शिशु स्वस्थ रहता है। मां का दूध जल्दी उतरता है, शिशु का पेट साफ रहने के साथ साथ शिशु को पीलिया होने की संभावना कम रहती है मां का दूध शिशु को छः माह तक देना चाहिए।शिशु को डिब्बे का दूध या जानवर का दूध देने से कुपोषण और संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है आईएमएस अधिनियम के अनुसार डिब्बी के दूध एवं बोतल की बिक्री वह प्रयोग को बढ़ावा देना कानूनी अपराध है। इस कार्यशाला में अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ डी के शर्मा, डीआईओ डॉ राजेश चौधरी, डी एच इआईओ, डिस्ट्रिक एआरओ, डी पी एम, डी सी पी एम, डीएमएच सी, जय सिंह, रीजनल कोऑर्डिनेटर यूनिसेफ, सभी ब्लॉक के अधीक्षक, स्टॉफ नर्स, बी पी एम आदि ने भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद, राष्ट्रीय बजरंग दल की जिला बैठक संपन्न

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। श्री हनुमान मंदिर, सीहीपुर के प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषदध् राष्ट्रीय बजरंग दल की जिला बैठक आहूत की गई। जिला बैठक के मुख्य वक्ता के रूप में तरुण कुमार शुक्ल प्रांतीय महामंत्री अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद,उपस्थित रहे। बैठक का संचालन चंद्र प्रकाश तिवारी विभाग महामंत्री व सुधीर कुमार जिला मंत्री ने संयुक्त रूप से किया। बैठक में उपस्थित पदाधिकारी को संबोधित करते हुए श्री शुक्ल ने कहा राष्ट्रीय बजरंग दलध्राष्ट्रीय छात्र परिषद अपने क्षेत्र के नौजवानों में खेल प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन ग्राम पंचायत,न्याय पंचायत,नगर पंचायत, ब्लॉक,तहसील व जिला स्तर पर कराएं।उन्होंने जोर देते हुए कहा कि सभी आयाम की समितियों का जल्द से जल्द गठन कर समिति सूची प्रांत को भेजें। आगामी 14 अगस्त से अखंड भारत संकल्प दिवस,नाग पंचमी,कृष्ण जन्माष्टमी सहित कई कार्यक्रमों का आयोजन करना हैं । जिला में सभी के प्रयास से 200 श्री हनुमान चालीसा केंद्र चलाए जाने का लक्ष्य भी प्रांतीय महामंत्री ने रखा। इसी क्रम में प्रांत अध्यक्ष राष्ट्रीय छात्र परिषद,डॉ वीरेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि हमें प्रेम सौहार्द की भावना से एकजुट होकर संगठन का कार्य करना चाहिए।आपस में वैमनस्यता व बुराइयों को दूर करने की आवश्यकता है। एडो.प्रभाकर तिवारी उपाध्यक्ष

हिंदू एडवोकेट फोरम काशी प्रांत ने कहा की जिले में कार्य कर रहे सभी आयामों के प्रमुख अपनी समितियों का शीघ्र गठन कर संगठन के उद्देश्य के अनुरूप कार्य करें। बैठक के अंत में कुछ प्रमुख घोषणाएं नये दायित्व की जिला अध्यक्ष अजय पाण्डेय द्वारा सबसे विचार विमर्श कर किया गया।जिसमें राष्ट्रीय बजरंग दल के नगर अध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव उर्फ पंकज,नगर उपाध्यक्ष संतोष कुमार मिश्र,नगर महामंत्री शशांक सौरभ, नगर मंत्री सुजीत सिंह,नगर उपाध्यक्ष शिवकुमार वैश्य,राम आश्रय तिवारी उर्फ रामू ब्लॉक उपाध्यक्ष सिकरारा, संतोष सिंह ब्लॉक मंत्री सिकरारा एवं सुरेंद्र कुमार प्रजापति नईगंज वार्ड उपाध्यक्ष,अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद,जय सिंह चौहान उपाध्यक्ष,नगर पंचायत गौराबादशाहपुर के नामों की घोषणा की गई। बैठक में मुख्य रूप से राकेश श्रीवास्तव विभाग अध्यक्ष,रमेश मिश्र विभाग उपाध्यक्ष,विवेक उपाध्याय जिला मंत्री,जितेंद्र बहादुर सिंह जिला अध्यक्ष,कृष्ण कुमार उपाध्याय महामंत्री,रा ब दल,संजय शुक्ल वार्ड अध्यक्ष,गोविंद कुमार,सचिन श्रीवास्तव,शैलू चौहान आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। जिला अध्यक्ष अजय पाण्डेय ने बैठक में उपस्थित लोगो के प्रति आभार व्यक्त किया।

अज्ञात वाहन की चपेट में आने से बाइक सवार युवक की मौत

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। सिकरारा थाना क्षेत्र अंतर्गत रायबरेली राज मार्ग पर क्षेत्र के टेकारी मोड़ पर सोमवार को भोर में अज्ञात वाहन की चपेट में आने से एक बाइक सवार युवक की मौके पर ही मौत हो गई। वाहन चालक वाहन के साथ फरार हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस शव तथा बाइक को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई में जुट गई। मिली जानकारी के अनुसार मछलीशहर कोतवाली के अहमदपुर गाँव निवासी अशोक कुमार यादव(34) सोमवार को भोर में अपनी बाइक से ननिहाल से घर जा रहे थे। अभी वे उक्त मार्ग पर टेकारी मोड़ के पास पहुँचे थे कि किसी अज्ञात वाहन की चपेट में आकर जमीन पर गिर कर बुरी तरह घायल हो गए। सूचना पर थानाध्यक्ष आशुतोष गुप्त मय फोर्स मौके पर पहुँच कर युवक की जांच किए तो उसकी मौत हो चुकी थी।उन्होंने परिजनों को फोन पर सूचित कर शव तथा बाइक को कब्जे में ले लिया। थोड़ी देर में युवक के चाचा अमर बहादुर यादव रोते विलखते परिजनों संग थाने पहुंच कर घटना के बारे में तहरीर दिया।

उन्होंने बताया कि युवक के पिता आशा राम यादव का निधन हो चुका है। उक्त सन्दर्भ में थानाध्यक्ष ने बताया कि मृतक के चाचा की तहरीर पर अज्ञात वाहन चालक के विरुद्ध बिभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर शव का पंचनामा कर पोस्ट मार्टम के लिए भेज दिया गया।

फूलमती माता का श्रृंगार 251 किलो फूलों से किया

ब्यूरो चीफ आर एल पांडेय

लखनऊ। फूल वाली गली चौक लखनऊ स्थित प्राचीन फूलमती देवी मंदिर शीतला माता मंदिर में महिलाओं द्वारा तीज का उत्सव मनाया गया जिसमें फूलमती माता का श्रृंगार 251 किलो फूलों से किया गया एवं महिलाओं ने हरे रंग के सुंदर–सुंदर साड़ी व लहंगे पहनकर एवं माता रानी को सुंदर–सुंदर भजन भेंट किया उसके उपरांत प्रसाद वितरण किया गया।

पाली थाना पुलिस ने एक्सपर्ट लैब संचालक और डॉक्टर को भेजा जेल

ब्यूरो रिपोर्ट– जनार्दन श्रीवास्तव

'पाली (हरदोई)' जनपद हरदोई में अपराध नियंत्रण व अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु पुलिस अधीक्षक नीरज जादौन के कुशल निर्देशन में अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक पश्चिमी के पर्यवेक्षण व क्षेत्राधिकारी शाहाबाद के कुशल नेतृत्व में थाना पाली पुलिस ने सोमवार को न्यू हिंद हॉस्पिटल के डॉक्टर और एक्सपर्ट पैथोलॉजी लैब संचालक को गिरफ्तार करके जेल भेजा है। एक्सपर्ट पैथोलॉजी लैब द्वारा एक महिला की फर्जी एचआईवी पॉजिटिव रिपोर्ट बनाई गई थी, जिसके नाम पर डॉक्टर ने डरा कर महिला के पति से रुपये 55 हजार ठग लिये थे। जब महिला की दूसरी लैब में जांच करायी गयी तो वह नेगेटिव आई, जिसके बाद महिला के पति ने मुख्यमंत्री व सीएमओ से शिकायत की थी। स्वास्थ्य विभाग के नोडल अधिकारी डॉ पंकज मिश्रा द्वारा जांच में लैब संचालक, डॉक्टर व आशा बहू को दोषी पाये जाने पर एफआईआर दर्ज कराई गई थी।

पाली थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी व्यक्ति ने बीते माह मुख्यमंत्री से आईजीआरएस के माध्यम से शिकायत की थी कि उसकी पत्नी की डिलीवरी होनी थी, वह अपनी पत्नी को लेकर पीएचसी पाली गया जहां से आशा बहू रेखा गुप्ता उसको बरगलाकर पाली के बरगद तिराहे के पास हिंद हॉस्पिटल पर ले गई, जहां डॉक्टर ने खून की जांच करने को एक्सपर्ट पैथोलॉजी लैब भेज दिया। एक्सपर्ट पैथोलॉजी लैब के संचालक सचिन दीक्षित द्वारा फर्जी एचआईवी पॉजिटिव रिपोर्ट बना दी गई। जिसके आधार पर हिंद हॉस्पिटल के डॉक्टर हिमांशु पाठक ने पीड़िता के पति से डरा धमकाकर रुपये 55 हजार ठग लिए। महिला के पति ने जब दूसरी लैब में जांच कराई तो रिपोर्ट निगेटिव आई। आईजीआरएस के माध्यम से मुख्यमंत्री व सीएमओ हरदोई से मुलाकाती शिकायत की गई। मामले की जांच नोडल अधिकारी डॉ पंकज मिश्रा ने की तो न्यू हिंद हॉस्पिटल और एक्सपर्ट पैथोलॉजी लैब और आशा बहू को दोषी पाया गया। जिसके बाद पाली थाने में इंडियन मेडिकल काउंसिल एक्ट व अन्य सुसंगत धाराओं में नोडल अधिकारी डॉ पंकज मिश्रा ने अभियोग पंजीकृत कराया। सोमवार को पाली थाने के प्रभारी निरीक्षक आलोक मणि त्रिपाठी ने बताया कि पाली पुलिस टीम ने एक्सपर्ट पैथोलॉजी लैब के संचालक सचिन दीक्षित पुत्र विनोद दीक्षित निवासी ग्राम सिमरिया थाना सवायजपुर,व डॉ हिमांशु पाठक पुत्र स्व0 सूर्यकुमार पाठक निवासी अहलादपुर थाना सिरसिया जनपद श्रावस्ती को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। आशा बहू रेखा गुप्ता पत्नी राकेश निवासी ग्राम भरखनी थाना पाली व नर्स लक्ष्मी के खिलाफ भी वैधानिक कार्यवाही प्रचलित है। प्रभारी निरीक्षक ने यह भी बताया कि भविष्य में उपरोक्त लैब संचालक और डॉक्टर के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट के तहत भी कार्यवाही की जायेगी।

ग्रामीणों ने हमलावरों की बाइक में लगाई आग, धू–धू कर जल गई बाइक

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। जलालपुर थाना क्षेत्र में रविवार देर रात एक सरकारी टीचर पर हमला करने वाले हमलावरों की दो बाइक में ग्रामीणों ने आग लगा दी और कुछ ही देर में दोनों बाइक धू–धू कर पूरी तरह से जल गई। बताया गया कि टीचर सुनील यादव पर उस समय हमला हुआ, जब वह अपने घर से करीब पाँच सौ मीटर दूर अपनी पाहीध पंपसेट पर गये थे। हमलावर दबंग तीन बाइक पर करीब आधा दर्जन की संख्या में वहां पहुंचे थे और लोहे की राड,लाठी– डंडा से लैस दबंगों ने टीचर पर हमला बोल दिया। दबंगों के हमले में टीचर को हाथ,पैर सहित शरीर की कई जगहों पर गम्भीर चोटें आई हैं। बचाव में पहुंचे एक और व्यक्ति का सर भी फूट गया। चीख– पुकार की आवाज सुनकर वहां पहुंचे सैकड़ों की संख्या में ग्रामीणों ने दबंगों को दौड़ा लिया। ग्रामीणों का आक्रोश देख दबंग वहां से भाग निकले। दबंगों की दो बाइक मौके पर ही छूट गई ।जिसके बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने बाइक में आग लगा दिया। पूरा मामला जलालपुर थाना क्षेत्र के हरीपुर (मठिया) गांव का है। पीड़ित की तहरीर के बाद पुलिस मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच पड़ताल में जुटी हुई है। इस संबंध में सोमवार को जानकारी लेने पर थाना अध्यक्ष मनोज कुमार सिंह ने बताया कि मामला संज्ञान में है तहरीर पड़ी है मामले की जांच पड़ताल की जा रही है जाली बाइकों को कब्जे में लिया गया है हमलावरों की तलाश की जा रही है।

राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस अभियान 10 अगस्त 2024 को आयोजित – डा. लक्ष्मी सिंह सीएमओ

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 लक्ष्मी सिंह ने अवगत कराया है कि राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस अभियान के अन्तर्गत 01 से 19 वर्ष के आयु के सभी बच्चों को कृमि संक्रमण से बचाने के लिये जनपद में कृमि मुक्ति अभियान का आयोजन वर्ष में दो बार किया जाता है। इस वर्ष भी राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस शहरी एवं ग्रामीण क्षत्रों में मनाया जाना है। जनपद में कुल 2519086 बच्चों (01 से 19 वर्ष) को एल्बेण्डाजोल की दवा खिलाने का लक्ष्य है।

राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस अभियान 10 अगस्त 2024 को आयोजित किया जायेगा। छूटे हुए बच्चों को आच्छादित करने के लिए 14 अगस्त 2024 को मॉपअप दिवस आयोजित किया जाना है। अभियान में समस्त आगनवाड़ी केन्द्रों पर आंगनवाड़ी कार्यकत्री के माध्यम से एवं निजी, सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों, मदरसों एवं केन्द्रीय विद्यालयों में सभी छात्रध् छात्राओं के माध्यम से एल्बेण्डाजोल खिलाई जायेगी।

आगनवाड़ी केन्द्रों पर 01 से 05 वर्ष तक के सभी पंजीकृत बच्चे, 06 से 19 वर्ष तक के स्कूल न जाने वाले सभी बालकध् बालिकायें, ईट भट्टों इत्यादि पर कार्य करने वाले श्रमिक एवं घुमन्तू लाभार्थियो, निजी, सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों, मदरसों एवं केन्द्रीय विद्यालयों में 06 से 19 वर्ष तक के सभी छात्रध्छात्राओं को शिक्षकों के माध्यम से आच्छादित किया जायेगा। किशोर जुवेनाइल होम–किशोर जुवेनाइल होम में सभी किशोरों को प्रभारी चिकित्सा अधिकारी के माध्यम से आच्छादित किया जायेगा। उक्त अभियान में एल्बेण्डाजोल टैबलेट निम्न अनुसार खिलाया जायेगा। 01 से 02 वर्ष लच्छित आयु वर्ग को आधी खुराक (200 मि0ग्रा0)02 चम्मचों के बीच में चूरा बना करध्पीस कर स्वच्छ जल के साथ खिलाया जाये। 02 से 19 वर्ष को एक गोली (400 मि0ग्रा0) 02 चम्मचों के बीच में चूरा बना करध्पीस कर स्वच्छ जल के साथ खिलाया जाये अथवा गोली को अच्छी तरह चबाकर खाने को कहा जाये। बेहतर परिणाम हेतु गोली को चबाकर पीस करध्चूरा बनाकर खिलाया जाये।

अभियान के सफल संचालन हेतु 30 जुलाई 2024 को आयोजित जनपद स्तरीय अर्न्तविभागीय समन्वय बैठक में जिला अधिकारी महोदय द्वारा स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग को निर्देशित किया गया कि शासन से प्राप्त दिशा–निर्देश के अनुरूप शत–प्रतिशत आगनवाड़ी केन्द्रों पर तथा समस्त निजी, सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों, मदरसों एवं केन्द्रीय विद्यालयों में समस्त छात्र/छात्राओं को 10 अगस्त 2024 को तथा छूटे हुए बच्चों को 14 अगस्त 2024 को एल्बेण्डाजोल दवा खिलाना सुनिश्चित करें।

अस्थाई गोवंश आश्रय स्थलों के लिए सीडीओ ने लिया समीक्षा बैठक

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। जिलाधिकारी रविन्द्र कुमार माँदड़ के निर्देशन में मुख्य विकास अधिकारी साईं तेजा सीलम की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों के स्थापना, संचालन प्रबंधन आदि के संबंध में जनपद स्तरीय अनुश्रवण समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी के द्वारा निर्देशित किया गया कि सभी पशु चिकित्साधिकारी सोमवार और मंगलवार के दिन गौशालाओं का निरीक्षण करेंगे और रजिस्टर पर अंकित करेंगे कि कितने पशु गौशाला में है। उन्होंने गौशालाओं में खड़ंजा, नाली, कीचड़ की समस्या की समीक्षा की और निर्देशित किया कि यदि कहीं भी समस्या हो तो उसकी सूचना संबंधित खड़ विकास अधिकारी को दिया जाए।

मुख्य विकास अधिकारी ने निर्देशित किया कि गौशालयों में पर्याप्त संख्या में केयरटेकर नियुक्त किए जाएं और ऐसे केयरटेकर की नियुक्ति की जाए, जिनमें जिम्मेदारी और सेवा भाव की भावना हो। उन्होंने अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद जौनपुर को निर्देशित किया कि शहर में निराश्रित गोवंश न दिखे। सोनीपुर वृहद गौशाला के निर्माण के संबंध में जानकारी ली और इस महीने के अंत तक कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने गोवंशो के भरण पोषण के भुगतान, भूसा टेंडर के संबंध में भी जानकारी ली। उन्होंने अधिशासी अधिकारियों को निर्देशित किया कि कान्हा गौशाला के लिए जगह चिन्हित करें। सभी गौशालाओं में सोलर लाइट, सीसीटीवी लगाए जाने के निर्देश दिए।

राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य मंच का ग्रामीण इंटर कालेज में हुआ आयोजन

हरदोई (अंबरीष कुमार सक्सेना) शासन के अदेशानुसार चलाए जा रहे राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य मंच

अभियान के अंतर्गत आज ग्रामीण गौरी इंटर कॉलेज कोथावां में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा सभी बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। बच्चों की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या को जानकर उन्हें टीम द्वारा दवा दी गयी। उन्हें पेट में कीड़े की भी दवाएं वितरित की गई। स्वास्थ्य टीम के द्वारा सभी छात्रों को सरकार द्वारा चलाई जा रही स्वास्थ्य योजनाओं के बारे में बताया गया। डॉ रागिनी ने कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। सभी को स्वास्थ्यकर जीवन शैली अपनाना चाहिए।

डॉ नीतू ने छात्राओं को भ्रूण हत्या एवं बेटियों मान सम्मान के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में मेहंदी और पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन कराया गया। मेंहदी प्रतियोगिता में अम्बिका ने प्रथम, फूलजहाँ ने द्वितीय व अनामिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पोस्टर प्रतियोगिता में पारस ने प्रथम, आयुष ने द्वितीय व सुहानी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कार्यालय परिसर में किया गया वृक्षारोपण

ब्यूरो चीफ आर एल पांडेय

जालौन। अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद कानपुर प्रांत के संगठन मंत्री एवं अवध प्रांत के अध्यक्ष मेजर वीरेंद्र सिंह तोमर ने बताया कि स्वस्थ पर्यावरण एवं सरकार की मनसा अनुसार एक पेड़ मां के नाम प्रोग्राम के तहत वृक्षारोपण के लिए जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कार्यालय ने हमारी टीम को आमंत्रित किया था। अतः हमारी टीम ने जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कार्यालय पहुंचकर सभी लोगों ने मिलकर सैनिक कल्याण के परिसर में विभिन्न प्रकार के पौधों का वृक्षारोपण किया इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में प्रमुख रूप से कमांडर नयन सिंह रावत जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी सैनिक बंधु कमेटी के उपाध्यक्ष अनारी कप्तान महेंद्र सिंह अखिल

भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद के कैप्टन गंगा राम पाल सूबेदार मेजर आसाराम दोहरे सूबेदार मेजर अमर सिंह सूबेदार हरदत सिंह भदोरिया सूबेदार बीएस चौहान सूबेदार रामजी सिंह सूबेदार अर्जुन सिंह सूबेदार रूप रामपाल सूबेदार अयोध्या प्रसाद नायक राघवेंद्र सिंह निरंजन सूबेदार सूरज सिंह सूबेदार एसपी सिंह हवलदार बलवंत सिंह एवं पूर्व सैनिक वेलफेयर एसोसिएशन के धर्मगुरु ओनरी लेफ्टिनेंट शत्रुघ्न सिंह सेंगर कैप्टन संतोष रैकवार के साथ–साथ सैनिक कल्याण कार्यालय के स्टाफ वरिष्ठ लिपिक संदीप तरसोलिया सैनिक कल्याण कार्यकर्ता नायब सूबेदार सीता शरण मुन्नी देवी राजेश सिंह एवं राहुल समेत काफी संख्या में लोगों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

क्रिकेट मैच के दौरान एक दूसरे को चिढ़ाने पर मारपीट

कानपुर, संवाददाता। कानपुर में जाजमऊ के केडीए स्थित एकता पार्क मोहल्ले में क्रिकेट खेलने के दौरान दो नाबालिग किशोरों में नो बॉल के बाद आपस में नाम चिढ़ाने को लेकर विवाद हो गया। इसके बाद दोनों में मारपीट हो गई। घटना में एक बच्चें की मौत हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस जांच पड़ताल में जुटी है। जाजमऊ के केडीए स्थित एकता पार्क मोहल्ले के निवासी शाहनवाज के घर पर उनकी बेटी और नाती आरिस (11) रहता था। आरिस के पिता कमाल की कैंसर से ग्रसित होने के कारण कई वर्ष पहले मौत हो चुकी है। बताया गया कि आरिस इलाके के रहने वाले टेनरी कर्मी रेहान के बेटे अरहान (11) समेत अन्य बच्चों के साथ क्रिकेट खेल रहा था। इस नो बॉल फेंकने को लेकर दोनों के बीच विवाद हो गया। साथ ही दोनों के बीच एक दूसरे के नाम को चिढ़ाने से बात और बढ़ गई। देखते ही देखते दोनो में मारपीट शुरू हो गई। इस मारपीट में आरिस बेहोश हो गया। इसके बाद साथी सथी उसे लेकर घर पहुंचे। यहां से उसे लालबंगला स्थित एक निजी अस्पताल ले जाया गया।

परिजनों का पोस्टमार्टम कराने से इन्कार

यहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना पर भारी भीड़ जमा हो गई। वहीं, सूचना पर जाजमऊ क्राइम इंस्पेक्टर जावेद खान पूरी टीम के साथ पहुंचे। दोनों पक्ष में समझौते पर बात चलने लगी। फिर आपसी सहमति के बाद मृतक के परिजनों ने पोस्टमार्टम कराने से इन्कार कर दिया। लेकिन, इंस्पेक्टर जावेद ने पोस्टमार्टम कराने की बात कही। इसके बाद मौके विधायक मोहम्मद हसन रूमी पहुंचे। उन्होंने पोस्टमार्टम कराने से इन्कार कर दिया। फिलहाल बातचीत का दौर जारी है।

तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक को मारी टक्कर, दो दोस्तों की मौत

उन्नाव, संवाददाता। उन्नाव जिले में बांगरमऊ–बिल्हौर मार्ग पर शनिवार रात तेज रफ्तार ट्रक ने सामने आ रही बाइक में टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि बाइक 50 मीटर दूर तक की घिसटती चली गई। हादसे में बाइक सवार तीन दोस्त गंभीर रूप से घायल हो गए। राहगीरों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने तीनों घायलों को स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। यहां डॉक्टर ने दो दोस्तों को मृत घोषित कर दिया। वहीं, तीसरे को गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर किया गया है। घटना के बाद चालक ट्रक छोड़कर भाग निकला। हरदोई जिले के संडीला कोतवाली के गांव मौलवीखेड़ा निवासी सत्यवान (22), साथी शिवा (20) और छोटेलाल (21) के साथ शनिवार रात 11 बजे बाइक से हरिद्वार जाने के लिए निकले थे। बांगरमऊ– बिल्हौर मार्ग पर भुड्डा गांव और नानामऊ गंगा पुल के बीच रात डेढ़ बजे बांगरमऊ की ओर से यूकेलिप्टस के तने लादकर जा रहे ट्रक ने सामने से बाइक में टक्कर मार दी।

चालक फरार है और ट्रक कब्जे में लिया गया

हादसे में तीनों गंभीर घायल हो गए। सीएचसी में सत्यवान और शिवा का मृत घोषित कर दिया गया। छोटेलाल को जिला अस्पताल रेफर किया गया है। मृतकों के पास मिले मोबाइल से परिजनों को सूचना दी गई। कोतवाल राजकुमार ने बताया कि हादसे में दो दोस्तों की मौत हुई है और एक घायल है। शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। चालक फरार है और ट्रक कब्जे में लिया गया है।

पति की हत्या में पत्नी और प्रेमी को उम्रकैद

बांदा, संवाददाता। पति की हत्या कर उसका शव छिपाने के मामले में पत्नी और उसके प्रेमी को दोष सिद्ध होने पर प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश चंद्रपाल द्वितीय की अदालत ने आजीवन सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही अन्य धाराओं में सजा व 14 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया है। जुर्माना अदा न करने पर एक–एक साल की अतिरिक्त सजा भुगतनी पड़ेगी। घटना के समय से ही दोनों दोषी जेल में निरुद्ध हैं। देहात कोतवाली के भज्जू का पुरवा निवासी जगजीवन ने 26 अप्रैल 2019 को रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि सुबह वह घर में था, तभी पता चला कि बाईपास सड़क पर उसके भाई अंगद प्रसाद का शव पड़ा है। भाई अंगद रात तीन बजे पत्नी सुनीता के साथ हंसिया लेकर कल्लू यादव के खेत की फसल काटने गया था। भाई अंगद की हत्या पत्नी सुनीता और उसके साथी ने की है। हत्या को दुर्घटना दिखाने के इरादे से सड़क पर शव फेंक दिया है। पुलिस ने पत्नी सुनीता व अज्ञात व्यक्ति के नाम रिपोर्ट दर्ज कर विवेचना की। विवेचक रामआसरे यादव ने पत्नी सुनीता और उसके प्रेमी प्रेमबाबू निवासी मनीपुर थाना गिरवां को गिरफ्तार कर लिया। सुनीता के पास से मोबाइल फोन बरामद किया। मोबाइल में प्रेमी प्रेमबाबू और सुनीता की आपत्तिजनक फोटो प्राप्त कर आरोप पत्र दाखिल किया। सुनवाई के दौरान अभियोजन की ओर से मामले में वादी भाई जगजीवन, रामशरन, कांस्टेबल दुर्गा परिहार, मृतक का भाई भारत, गुरहे का चौकीदार जुगुल किशोर गुरेह, डॉ. मो.अनवर, प्रभारी निरीक्षक विनोद कुमार, विवेचक रामआसरे यादव और निरीक्षक प्रभारी तारा सिंह पटेल समेत 10 गवाह पेश किए गए। पत्रावली में उपलब्ध साक्ष्यों व अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के बाद न्यायाधीश ने दोनों दोषियों को सजा सुनाई।

जिला अस्पताल में मरीजों की रही भीड़, कई चिकित्सक नदारद

शामली, संवाददाता। सावन मास की कांवड़ यात्रा संपन्न होने और शिवरात्रि की छुट्टी से अगले दिन जिला अस्पताल खुलते ही मरीजों की भीड़ उमड़ी। शनिवार को जिला अस्पताल में करीब दो हजार के लगभग मरीज पहुंचे लेकिन कई चिकित्सक अवकाश पर होने तो कई ओपीडी में न मिलने के कारण मरीज परेशान रहे। मरीज चिकित्सकों का इंतजार करते रहे। शुक्रवार को शिवरात्रि पर जिला अस्पताल में छुट्टी रही। छुट्टी और सभी रास्ते खुलने के बाद शनिवार को जिला अस्पताल खुला तो सुबह से ही मरीजों का पहुंचना शुरू हो गया था। नौ बजे तक ओपीडी में मरीजों की भीड़ लग गई। मरीज लाइन में खड़े रहे। मरीजों को पर्चा बनवाने से लेकर चिकित्सक को दिखाने और फिर दवा लेने के लिए लाइन में लगना पड़ा। इस तरह से मरीज को डेढ़ से दो घंटे तक का समय लगा। दोपहर 12 बजे ओपीडी में बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. अशोक कुमार, त्वचा रोग विशेषज्ञ डॉ. कर्मवीर सिंह, डॉ. समद अली, डॉ. दक्षिरा और डॉ. अंजली तोमर नहीं मिली। उनके कक्ष में कुर्सी खाली थी, जबकि मरीजों की लाइन लगी थी। जिला अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. किशोर कुमार आहूजा ने बताया डॉ. समद अली, डॉ. अंजली तोमर, डॉ. दक्षिरा मेडिकल अवकाश पर चल रही हैं, जबकि डॉ. कर्मवीर का शनिवार को सहारनपुर अस्पताल में बैठने का दिन है। बाल रोग विशेषज्ञ अशोक कुमार की ड्यूटी एनएनसीयू में भी रहती है। उन्होंने बताया कि ओपीडी में आए सभी मरीजों की जांच कर दवा दी गई है।

बोले मरीज

मोहल्ला कलंदरशाह निवासी सयदीन ने बताया कि उसे एलर्जी की समस्या है। वह डाक्टर से दवा लेने आई थी, लेकिन उसे त्वचा रोग विशेषज्ञ नहीं मिला, जिस कारण उसे बिना इलाज के ही लौटना पड़ा।

गांव लिलौन निवासी सोमपाल ने बताया उसे सांस लेने में परेशानी होती है। वह अस्पताल में आया तो डॉक्टरों के कमरे के बाहर बहुत भीड़ लगी मिली। एक घंटे में उनका नंबर आया। रीना ने बताया कि वह सुबह ही दवा लेने के लिए अस्पताल आई थी। उसे काफी देर तक इंतजार करना पड़ा। दो घंटे में दवा मिली है।

चिकित्सकों की हाजिरी के लिए लगी बायोमेट्रिक मशीन

जिला अस्पताल के सीएमएस डॉ. किशोर कुमार आहूजा ने बताया चिकित्सकों समेत सभी स्वास्थ्यकर्मियों की हाजिरी के लिए बायोमेट्रिक फेस रीडिंग से हाजिरी लगाई जा रही है। दो दिन पहले ही बायोमेट्रिक मशीन लगी है। अब चिकित्सकों को आने व जाने के समय अपनी हाजिरी बायोमेट्रिक मशीन से लगानी होगी। इसके साथ ही रजिस्टर में भी हाजिरी लगाई जा रही है।

सीएचसी में नहीं हुए एक्सरे, जिला अस्पताल भेजे गए मरीज

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शामली में शनिवार को एक्सरे बंद रहे। एक्सरे कक्ष पर ताला लगा हुआ था। बताया गया है कि एक्सरे करने वाले रवि कुमार के अवकाश पर होने के कारण एक्सरे नहीं हो पाए। सीएचसी पर रोजाना 60 से 70 एक्सरे होते हैं। गोशाला रोड निवासी शमीम ने बताया वह पहले सीएचसी पर एक्सरे कराने गया, वहां बंद मिलने पर उन्हें जिला अस्पताल भेजा गया। जिला अस्पताल में एक्सरे कराने वाले मरीजों की भीड़ होने के कारण परेशानी उठानी पड़ी।

मथुरा जंक्शन पर दिनदहाड़े फिल्मी स्टाइल में चलने लगी गोलियां

मथुरा, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मथुरा में रविवार को मथुरा जंक्शन रेलवे स्टेशन पर जीआरपी और इनामी बदमाश के बीच मुठभेड़ हो गई। घटना से यात्रियों में अफरातफरी मच गई। जीआरपी टीम ने तत्काल घेराबंदी की। सूझबूझ से किसी यात्री को चोट पहुंचे बिना बदमाश को गिरफ्तार कर लिया। इस पर 15 इनाम घोषित था। घटना दोपहर करीब 1:30 बजे की है। जंक्शन के प्लेटफार्म नंबर एक पर यात्रियों की भीड़ थी। इसी समय जीआरपी टीम को सूचना मिली कि 15 हजार का इनामी बदमाश सत्य प्रकाश पुत्र रामबाबू, निवासी नगला छत्ती, थाना फरह मौजूद है। उसके पास अवैध असलाह है। वह किसी वारदात को अंजाम देने की फिराक में आगरा एंड पर मौजूद है। सूचना पर जीआरपी टीम ने बदमाश को पकड़ने के लिए घेराबंदी की। घिरता देख बदमाश ने भागते हुए जीआरपी टीम पर गोली चला दी। बदमाश के हमले से पुलिस बाल–बाल बच गई। पुलिस ने जवाबी कार्रवाई की। घेराबंदी कर आरोपी सत्यप्रकाश को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से तमंचा कारतूस और जमीन पर गिरा खाली खोखा बरामद किया है। आरोपी के पास से बरामद बैग से पुलिस ने करीब ढाई लाख रुपए के जेवर बरामद किए हैं। ये जेवर आरोपी ने ट्रेन में सफर कर रही महिला यात्रियों से चुराए थे। थानाध्यक्ष जीआरपी संदीप तोमर ने बताया कि आरोपी सत्य प्रकाश ने 14 फरवरी 2024 को आंध्र एक्सप्रेस ट्रेन में सफर कर रही महाराष्ट्र निवासी महिला यात्री प्रीति का बैग चुराया था। 17 मार्च 2024 को गोल्डन टेंपल एक्सप्रेस ट्रेन में मेरठ की रहने वाली प्रीति यादव का बैग चुराया था। दोनों वारदातों के मुकदमे जीआरपी थाने में दर्ज हैं।

खिलाफ दर्ज हैं 17 मुकदमे

बदमाश सत्य प्रकाश के खिलाफ चोरी, लूट समेत अन्य आपराधिक वारदातों के 17 आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। यह लगातार ट्रेनों में सक्रिय रहकर वारदातों को अंजाम दे रहा था। जीआरपी और रेल यात्रियों के लिए लंबे समय से सिर दर्द बना हुआ था। आरोपी को गिरफ्तार करने वाली टीम में एसआई गौरव शर्मा, एसआई शिवपाल सिंह और सर्विलांस प्रभारी अमित कुमार सिंह शामिल रहे।

आईटीआई भर्ती घोटाले में संयुक्त निदेशक तलब

बांदा, संवाददाता। निदेशक ने आईटीआई में हुए भर्ती घोटाले के मामले में चित्रकूटधाम मंडल संयुक्त निदेशक प्रशिशिक्षु को आख्या के साथ तलब किया है। मामले के बाबत तत्काल मांगी गई आख्या एवं संक्षिप्त इतिहास को चार माह बाद भी उपलब्ध नहीं कराए जाने पर सख्त चेतावनी दी है। आईटीआई भर्ती में धोखाधड़ी का शिकार हुए पीड़ित राजकुमार व संतोष आदि ने टेल्को पावर एजेंसी की ओर से उन्हें पात्रता के बावजूद अनुदेशन सेवा कार्मिक आउटसोर्सिंग चयनित नहीं करने पर अदालत की शरण ली थी।

सूत्रों का कहना है कि एजेंसी के कर्ताधर्ताओं ने पिछली टेंडर अवधि के दौरान भर्ती प्रक्रिया में तमाम अभ्यर्थियों से दो से तीन लाख रुपयों तक की अवैध वसूली की। अनेक पात्र अनुभवी अभ्यर्थियों का चयन नहीं किया। कुछ अभ्यर्थियों को फर्जी नियुक्ति पत्र दिए गए। गंभीर अनियमितताओं को लेकर अनेक पीड़ित अभ्यर्थियों ने सक्षम अधिकारियों को शिकायती प्रार्थना पत्र भी दिए, लेकिन एजेंसी के तथाकथित आरोपितों व जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई।

पीड़ितों ने अदालत की शरण ली। जबकि चित्रकूटधाम मंडल के राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में आऊटसोर्सिंग अनुदेशकों की भर्ती करने वाली आरोपित टेल्को पावर एजेंसी के कर्ताधर्ता पहले से ही इनके मकड़जाल में फंसे हैं। कुछ अधिकारियों के जरिए अब ऐन केन प्रकारेण नया टेंडर पाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाए हुए हैं। निदेशक ने मंडल के संयुक्त निदेशक को आख्या के साथ तीन दिन में लखनऊ तलब किया है। कहा कि चार माह में भी आख्या न भेजना लापरवाही दर्शाता है।

इटावा में आगरा–लखनऊ एक्सप्रेसवे पर बड़ा हादसा

इटावा, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के इटावा में बीती रात एक बड़ा हादसा हो गया। हादसा आगरा–लखनऊ एक्सप्रेसवे पर हुआ है। जहां एक डबल डेकर बस और कार की भीषण टक्कर हो गई। मिली जानकारी के मुताबिक, हादसे में अब तक छह लोगों की मौत हो चुकी है और 40 लोग घायल बताए जा रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ हादसे पर एसएसपी इटावा संजय कुमार वर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि हादसे में सात लोग मारे गए हैं। उन्होंने कहा कि रायबरेली से दिल्ली जा रही डबल डेकर बस की रात करीब 12:30 बजे एक कार से टक्कर हो गई। बस में 60 लोग सवार थे, जिनमें से चार लोगों की मौत हो गई और करीब 20–25 लोग घायल हो गए। जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। कार में सवार तीन लोगों की भी मौत हो गई। कुल सात लोगों की मौत हुई है।

स्लीपर बस में 70 लोग थे सवार

इस भीषण हादसे में सात की मौत हो गई, जबकि 40 लोग घायल हो गए हैं। सभी घायलों को इलाज के लिए आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय के ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया गया है। रायबरेली से शनिवार शाम दिल्ली के लिए रवाना हुई इस स्लीपर बस में करीब 70 लोग सवार थे।

इस वजह से हुआ हादसा

लखनऊ–आगरा एक्सप्रेसवे के चौनल नंबर 129 जिले के थाना उसराहार में शनिवार की रात करीब एक बजे बस के सामने अचानक से रॉन्ग साइड पर अनियंत्रित एक कार आ गई। इससे बस और कार की जबरदस्त भिड़ंत हो गई। इसके बाद बस अनियंत्रित होकर खंदी में पलट गई।

हादसे के बाद पुलिस और बचाव दल का रेस्क्यू

यूपीडा की टीम व स्थानीय पुलिस और बचाव दल ने बस में फंसे लोगों को जैसे–तैसे बाहर निकाला। मृतकों में तीन यात्री कार सवार व एक बस सवार है। वहीं, तीन की शिनाख्त नहीं हुई है। सूचना पर इमरजेंसी ट्रॉमा सेंटर में प्रोफेसर डॉ. सोमेंद्र पाल सिंह, डॉ. विश्वदीपक, डॉक्टर राजकुमार यादव, डॉ. शेष कुमार ने टीम के साथ सभी का उपचार शुरू कर दिया।

घायलों का अस्पताल में चल रहा इलाज

घटनास्थल का एसएसपी संजय कुमार वर्मा ने जायजा लिया है। उन्होंने बताया कि कार सवार को झपकी आने से कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर पार करके दूसरी तरफ चली गई थी। सामने आ रही बस उससे टकराकर खंदी में चली गई। छह लोगों की मौत हुई है। बाकी सभी का उपचार चल रहा है।

मृतकों की हो रही शिनाख्त

हादसे में कार सवार प्रधुम (24) पुत्र अरविन्द सिंह निवासी ठिटोली तालग्राम कन्नौज, मोनू (25) पुत्र ब्रजेश प्रताप निवासी गधिया तालग्राम कन्नौज, चंदा देवी मोनू की मां पति का नाम ब्रजेश प्रताप की हादसे में मौत हुई है। बस में सवार ओमप्रकाश (50) पुत्र असर्फी निवासी भरसरीया खीरी, जिला लखीमपुर खीरी व तीन अज्ञात की मौत है गई। मृतकों की शिनाख्त के प्रयास किए जा रहे हैं।

एक्सप्रेसवे पर अचानक सामने आ गई कार, पलटी

इटावा, संवाददाता। इटावा जिले में लखनऊ–आगरा एक्सप्रेसवे के चौनल नंबर 129 –30 पर शनिवार रात पौने एक बजे दर्दनाक हादसा हो गया। इसमें रायबरेली से दिल्ली जा रही स्लीपर बस के सामने डिवाइडर पार कर अनियंत्रित कार अचानक आ गई, जिससे टकराकर बस 50 फीट गहरी खंदी में पलट गई। इस भीषण हादसे में छह की मौत हो गई, जबकि 40 लोग घायल हो गए हैं। सभी घायलों को इलाज के लिए आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय के ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया गया है। रायबरेली से शनिवार शाम दिल्ली के लिए रवाना हुई इस स्लीपर बस में करीब 70 लोग सवार थे। लखनऊ–आगरा एक्सप्रेसवे के चौनल नंबर 129 जिले के थाना उसराहार में शनिवार की रात करीब एक बजे बस के सामने अचानक से रॉन्ग साइड पर अनियंत्रित एक कार आ गई। इससे बस और कार की जबरदस्त भिड़ंत हो गई। इसके बाद बस अनियंत्रित होकर खंदी में पलट गई।

ट्रॉमा सेंटर में घायलों का उपचार जारी

यूपीडा की टीम व स्थानीय पुलिस और बचाव दल ने बस में फंसे लोगों को जैसे–तैसे बाहर निकाला। मृतकों में तीन यात्री कार सवार व एक बस सवार है। वहीं, तीन की शिनाख्त नहीं हुई है। सूचना पर इमरजेंसी ट्रॉमा सेंटर में प्रोफेसर डॉ. सोमेंद्र पाल सिंह, डॉ. विश्वदीपक, डॉक्टर राजकुमार यादव, डॉ. शेष कुमार ने टीम के साथ सभी का उपचार शुरू कर दिया।

घटनास्थल का एसएसपी संजय कुमार वर्मा ने जायजा लिया है। सात लोगों की मौत हुई है।

संक्षिप्त खबरें

फ्लाईओवर से उतरती कार हुई अनियंत्रित, एक की मौत, चार गंभीर

सहारनपुर, संवाददाता। देहरादून एक्सप्रेस वे पर रविवार सुबह अनियंत्रित कार बड़कला फ्लाईओवर के पास पुलिया से टकरा गई। हादसे में कार सवार पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। जिला अस्पताल में उपचार के दौरान इनमें से एक की मौत हो गई। राजस्थान निवासी पांच लोग अपनी कार से देहरादून जा रहे थे। सुबह आठ बजे जैसे ही ये लोग फतेहपुर थाना क्षेत्र में एक्सप्रेस वे के बड़कला फ्लाईओवर से नीचे उतरे तो कार अनियंत्रित होकर पुलिया से टकरा गई। हादसे में राजेश पुत्र महेंद्र प्रकाश निवासी पाल्ली थाना सिंबूर जिला जोधपुर, सीताराम पुत्र मनफूल निवासी खेलीवाला थाना सदर गंगानगर, दक्ष और हर्ष पुत्रगण मनोज, दीपांशु पुत्र चंद्र मोहन योगी निवासी टिन्नी चोटी थाना जवाहर नगर गंगानगर राजस्थान गंभीर रूप से घायल हो गए। जबकि उनकी कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। सूचना पर पहुंची डायल 112 पर तैनात पुलिस कर्मियों ने घायलों को फतेहपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। जहां से सभी की हालत गंभीर होने के चलते चिकित्सकों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया। जिला अस्पताल में राजेश (40) को मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने बताया कि मृतक के परिजनों को सूचित कर दिया गया है। उनके आने के बाद अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

सेवा शिविर हुए समाप्त, सड़क पर छोड़ दिया कचरा

शामली, संवाददाता। कांवड़ यात्रा के चलते शहर के मुख्य मार्गों पर अलग–अलग संस्थाओं ने कांवड़ सेवा शिविर लगाए थे। शनिवार तक सभी शिविर समाप्त तो हो गए लेकिन संचालक भारी कचरा सड़क पर ही छोड़ गए। पालिका ने भी इसकी सुध नहीं ली। जबकि ये हवा के झोंकों के साथ चारों और फैल रहा है। कांवड़ यात्रा में शहर के सहारनपुर तिराहे से लेकर कैराना नहर पुल तक दर्जनों कांवड़ शिविर लगाए गए थे। शनिवार को यात्रा समाप्त होने के बाद शिविर भी समाप्त हो गए। लेकिन शिविरों के आसपास भारी मात्रा में कचरा सड़क पर ही पड़ा रह गया। कुड़ाना बस अड्डे से आगे, कैराना रोड पर मारुति के शोरूम के बगल में सड़क किनारे काफी कूड़ा पड़ा हुआ था। शनिवार दिनभर नगर पालिका द्वारा कोई साफ–सफाई नहीं कराई गई और न ही कूड़ा उठवाया गया। शहर में जहां भी कांवड़ शिविर लगे थे, वहां सफाई का विशेष ध्यान रखा गया था। यात्रा समाप्त हो चुकी है जहां भी कूड़ा पड़ा मिलेगा। वहां सफाई कराते हुए कूड़ा उठवाया जाएगा।

पिकअप की टक्कर से वृद्धा की मौत हुई

शामली, संवाददाता। थानाक्षेत्र में दिल्ली–सहारनपुर हाईवे पर हिंड बस स्टैंड पर पिकअप गाड़ी की टक्कर से 70 वर्षीय महिला की मौत हो गई। शनिवार देर शाम बाबरी निवासी हामिदा पत्नी शमशु गांव हिंड के बस स्टैंड के पास खड़ी थी। अचानक पीछे से आ रही पिकअप गाड़ी ने महिला को टक्कर मार दी। हादसे में महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। आसपास के लोगों ने पुलिस को हादसे की सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर पिकअप गाड़ी को कब्जे में ले लिया। पुलिसकर्मी घायल हामिदा को सीएचसी ले गए, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना पर मृतका के परिजन भी पहुंच गए। पुलिस का कहना है कि अभी परिजनों की तरफ से तहरीर नहीं मिली है। तहरीर मिलने पर रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस वाहन से भद्दा मजाक

एटा, संवाददाता। एटा के जलेसर में पुलिस जीप के बोनट पर चढ़ युवक ने रील बनवा ली। रील और फोटो सोशल मीडिया पर अपलोड होते ही चर्चाओं में आ गई है। पुलिस इसकी जानकारी न होने की बात कह रही है। वीडियो में युवक पुलिस की जीप संख्या यूपी82 जी 0252 के बोनट पर खड़ा होकर रील बनवा रहा है। यह गाड़ी जलेसर कोतवाली की और जगह कोतवाली क्षेत्र के गांव गोपालपुर की बताई जा रही है। बताया गया है कि चकबंदी कानूनगो एवं लेखपाल के साथ पुलिस पैमाइश कराने गई हुई थी। तभी खाली खड़ी पुलिस की जीप के बोनट पर चढ़कर युवकों ने रील बनाना शुरू कर दी। लोगों का कहना है कि यह रील व फोटो सोशल मीडिया पर कई दिनों से वायरल हो रहे हैं। इसके बाद भी पुलिस द्वारा अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। कोतवाली प्रभारी डॉ. सुधीर राघव का कहना है कि घटना मेरे संज्ञान में नहीं है। जांच कर इस युवक के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी।

दुकान से गायब मिला गरीबों का 180 क्विंटल खाद्यान्न

बांदा, संवाददाता। गरीबों के राशन में 180 क्विंटल की हेराफेरी में बिसंडा ब्लॉक के डभनी कोटेदार के विरुद्ध बिसंडा थाने में धारा 3/7 (आवश्यक वस्तु अधिनियम) के तहत रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। इसके साथ ही कोटे को निलंबित कर दिया गया है। पूर्ति निरीक्षक अतर्रा प्रशांत कुमार सिंह ने बताया कि अनियमितताओं की शिकायत के बाद जिला पूर्ति अधिकारी उबेदुर रहमान के आदेश पर बिसंडा के डभनी कोटेदार के खाद्यान्न की जांच की गई। जांच में 72.16 क्विंटल गेहूं व 108 क्विंटल चावल स्टाक में कम पाया गया। जिसका वितरण नहीं किया गया, लेकिन मौके पर नहीं मिला।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

मो0 - 7007415808, 9628325542, 9415034002
RNI NO - UPHIN/2022/86937
Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।